साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्द

२००४-०५

शब्द शक्ति की आराधना के लिए

'शब्दम' ध्वनि, नाद और अर्थ तीनों का सम्मिलित रूप है। इसके व्यापक क्षेत्र के अन्तर्गत विविध साहित्य-संगीत-कला स्वत: ही आ जाते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर माँ शारदा की कृपा से १७ नवम्बर २००५ को इस संस्था (शब्दम्) का गठन शिकोहाबाद (उ.प्र.) में हुआ।

उद्देश्य

१. हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि की उच्चस्तरीय रचनाओं और नव लेखन को बढ़ावा देना तथा उपलब्ध साहित्य को जन साधारण के सामने प्रस्तुत करना।

२. विविध भारतीय ललित कलाओं एवम् संगीत को प्रोत्साहित करना।

३. राष्ट्र भाषा हिन्दी के गौरव के लिए प्रयास करना।

४. हिन्दी को शिक्षण और बोलचाल के क्षेत्र में लोकप्रिय बनाना।

५. हिन्दी को रोजी-रोटी प्राप्त करने की भाषा बनाना तथा सब तरह के कारोबार में इसके प्रयोग को बढ़ावा देना।

६. भारत की एकता के लिए हिन्दी की सेवा करना।

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

२००८-०९

संपादन:

मुकुल उपाध्याय

डॉ. सुबोध दुबे

शब्दम् नियामक मंडल

अध्यक्ष :

श्रीमती किरण बजाज

कलकत्ता में १९५२ में वैष्णव उद्योगपति परिवार में जन्म। १९७९ से २००४-छब्बीस वर्षों तक ट्रेवल एजेंसी 'हिंदु मुसाफिर' मैनेजिंग डायरेक्टर पद पर कुशल संचालन। आई.एम.सी. लेडीज़ विंग की अध्यक्ष १९९२-१९९३। विश्व के भ्रमण का विस्तृत अनुभव। मातृभाषा हिंदी के प्रति अनुराग तथा साहित्य के प्रति विशेष अभिरूचि। 'ब्रज की लता पता मोहिं कीजे' का संपादन। 'करीब आ रहे हैं हम' काव्यसंग्रह की रचनाकार। 'शब्दम्' व 'पर्यावरण मित्र' की संस्थापक अध्यक्ष।

उपाध्यक्ष :

प्रो. नन्दलाल पाठक

औरिहार, उ. प्र. में १९२९ में जन्म। सोफ़ाया कालेज मुंबई में हिंदी विभागाध्यक्ष १९५३-१९८९। CARA- के सदस्य के रूप में दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के अधिवेशनों में सक्रिय योगदान। महाराष्ट्र प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष। हिंदी गीत गज़ल के प्रमुख कवि। अनेक काव्य संगोष्ठियों सम्मेलनों के संयोजक-संचालक। प्रकाशित पुस्तकें-'धूप की छांह', 'जहां पतझर नहीं होता', 'भगवद्गीता- आधुनिक दृष्टि'। 'शब्दम्' के संस्थापक न्यासी।

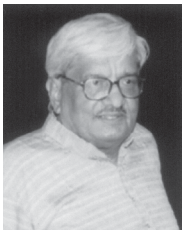

श्री उदय प्रताप सिंह

सुप्रसिद्ध कवि, लेखक। लोक सभा एवं वर्तमान में राज्य सभा के सदस्य। भारत सरकार की विभिन्न राजभाषा समितियों के सदस्य। १९९३ में तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन के भारतीय दल के अध्यक्ष तथा 'पेरामारीबू' विश्वविद्यालय द्वारा आचार्य की मानद उपाधि। शिवमंगल सिंह सुमन, ब्रजविभूषण, शायरे इमज़हती आदि पुरस्कारों से सम्मानित। विश्व के १८ देशों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार। उ. प्र. हिन्दी संस्थान तथा उर्दू अकेडमी की कार्यकारिणी के सदस्य।

सचिव :

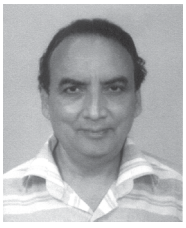

डॉ. सुबोध दुबे

कवि, लेखक, मानव संसाधन विकास विभाग में वरिष्ठ प्रबन्धक, साहित्य संगीत, कला के प्रचार प्रसार में पिछले २५ वर्षों से सक्रिय। आखिल भारतीय स्तर के कार्यक्रम करने का व्यापक अनुभव। आकाशवाणी, पत्रकारिता तथा विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं से जुड़ाव।

वरिष्ठ सदस्य :

श्री सोम ठाकुर

हिन्दी के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कवि, लेखक। सम्पूर्ण विश्व में काव्य पाठ के लिए यात्रा। डा. शिवमंगल सिंह सुमन, ब्रज भाषा, महीयसी महादेवी, परिवार पुरस्कार आदि सम्मानों से विभूषित। वर्तमान में उ.प्र. हिन्दी संस्थान के कार्यकारी उपाध्यक्ष।

श्री मुकुल उपाध्याय

वर्धा में १९३७ में गांधीवादी परिवार में जन्म। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए.। ३५ वर्षों तक बजाज इलेक्ट्रिकल्स में वरिष्ठ अधिकारी। विज्ञान जगत से विशिष्ट रूप से संबंध। एशियाई तथा विश्व एडवरटाइजिंग सम्मेलनों में भारतीय प्रतिनिधि मंडलों का नेतृत्व। हास्य-व्यंग की विशिष्ट वार्षिकी 'हास्यम्' का संपादन। जमनालाल बजाज संबंधी समस्त प्रकाशनों को संपादन-सहयोग।

विशिष्ट सलाहकार:

श्री शेखर बजाज

कलकत्ता में १९४८ में गांधीवादी देशसेवी उद्योगपति परिवार में जन्म। न्यूयॉर्क युनिवर्सिटी से एम.बी.ए.। चेयरमैन व मैनेजिंग डायरेक्टर, बजाज इलैक्ट्रिकल्स लि.। अनेक कंपनियों में चेयरमैन व डायरेक्टर के रूप में संबंद्ध। पूर्व अध्यक्ष 'एल्कोमा'(ELCOMA), 'एसोचेम'(ASSoCHEM), 'आई.एम.सी.'(IMC), 'इफ़मा'(IFMA),'सीएफबीपी' (CFBP) आदि। सामाजिक, सांस्कृतिक, संगीत संबंधी प्रवृत्तियों में रूचि।

श्री उमाशंकर शर्मा

समाजसेवक एवं विचारक तथा आध्यत्मिक क्षेत्र में विशेष रुचि रखनेवाले प्रखर हिन्दी सेवी तथा भारतीय संस्कारों एवं संस्कृति को समर्पित शिक्षाविद्।

'शब्दम्' की प्रादुर्भाव कथा

भारतीय सन्दर्भ में शब्द की शक्ति और महिमा अपार है। ज्ञान का आधार है शब्द। इस देश में 'शब्द ब्रह्म' की साधना होती रही है। नाद, ध्वनि और अर्थ तीनों का सम्मिलित रूप है शब्द। साहित्य, संगीत और कला के केन्द्र में है शब्द। 'शब्दम्' संस्था की पृष्ठभूमि शब्द की यही व्यापकता है।

हिन्दी काव्य मंच के दो रूप है। एक पर काव्य का रसास्वादन किया जाता है तो दूसरे पर कविता के नाम पर हल्का-फुल्का और कभी-कभी घटिया मनोरंजन परोस दिया जाता है। मुम्बई महानगर के काव्यमंचों के गिरते हुए स्तर को रोकने और उन्हें स्तरीय मंच का उदाहरण देने के लिए मैंने आज से लगभग एक दशक पहले मुम्बई में मित्रों और हितैषियों के भरोसे 'शब्दम्' नामक संस्था का निर्माण किया। संस्था के सौभाग्य से इसे प्रारम्भ से ही सुरूचि और भावना सम्पन्न श्रीमती किरण बजाज का सहयोग प्राप्त हो गया।

'शब्दम्' के तत्वावधान में प्रतिवर्ष कवि सम्मेलन और काव्य गोष्ठियों का आयोजन होता रहा। साहित्य जगत में 'शब्दम्' ने प्रतिष्ठा अर्जित की। ११ अगस्त १९९७ को आकाशवाणी मुम्बई और 'शब्दम्'-सांस्कृतिक संस्था के सहयोग से 'स्वतंत्रता स्वर्ण महोत्सव १९४७-१९९७' के अवसर पर आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी कवि सम्मेलन में देश के मूर्धन्य कवियों ने भाग लिया। इण्डियन मर्चेण्ट्स चैम्बर हाल में सम्पन्न यह कार्यक्रम स्मरणीय आयोजन था।

इसी प्रकार २३ जनवरी में सुप्रसिद्ध ग़ज़ल गायक व संगीत निर्देशक श्री जगजीत सिंह की उपस्थिति में हिन्दी ग़ज़ल के श्रेष्ठ रचनाकारों ने अपनी कृतियों से श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया।

हिन्दी कविता को हिन्दी की बोलियों का जो योगदान मिला है, उसे रेखांकित करने के लिए १२ फरवरी २००० को 'शब्दम्' द्वारा मुम्बई में ''ब्रज, अवधी और खड़ी बोली कविता'' शीर्षक से काव्य पाठ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अभूतपूर्व आयोजन में ब्रज और अवधी क्षेत्र से पधारे स्वनाम धन्य कवियों में सर्वश्री सोम ठाकुर, राधागोविन्द पाठक और कैलाश गौतम जैसों ने बोलियों का प्रतिनिधित्व किया। धीरे-धीरे मुम्बई जैसे महानगर में 'शब्दम्' ने अपनी विशिष्ट पहचान बना ली।

हिन्दी कविता का क्षेत्र बहुत व्यापक और प्रवाह बहुआयामी है। एक ओर आज भी वह अपनी बोलियों से पोषण पा रही है तो दूसरी ओर वह हिन्दी गीत की प्रमुख धारा हिन्दी ग़ज़ल को पूरा प्रश्रय दे रही है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर 'शब्दम्' का मुख्य केन्द्र ब्रजभाषी क्षेत्र शिकोहाबाद स्थित हिन्द लैम्प्स परिसर में १७ नवम्बर २००४ को स्थापित किया गया। यहाँ 'शब्दम्' को व्यापक दिशा मिली।

इस अवसर पर मेरी सुयोग्य, कर्मठ और साहित्यप्रेमी शिष्या जो एक सशक्त कवियित्री भी हैं श्रीमती किरण बजाज ने मेरी उम्र को ध्यान में रखकर मेरा कार्यभार हल्का करने के लिए मेरे विशेष आग्रह पद संस्था का अध्यक्ष पद स्वीकार किया। शब्दम् को वैधानिक स्वरूप मिला। आगे की कथा 'शब्दम्' के व्यक्तित्व के विकास की कथा है।

-नन्दलाल पाठक

'शब्दम्' एक यात्रा

हिन्दी भाषा और साहित्य में मेरी रूचि बचपन से ही रही है। आत्म अभिव्यक्ति के लिए कविताएं भी लिखती रही। पिछले ३०-३५ वर्षों में कई बार विदेश गई, न्यूयार्क में दो वर्ष रही भी। इन यात्राओं के दौरान समाज के विभिन्न वर्गों से अलग-अलग देशों में परिचय हुआ। तब मैंने करीब से देखा ये लोग अपनी-अपनी भाषा और संस्कृति से कितनी गहराई से जुड़े हुए हैं; अपनी छोटी-से-छोटी उपलब्धि, लेखन संगीत और कला को संजोए हुए हैं। मैं हमेशा सोचती हूं हम अपने भाषा-साहित्य-संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। हमारी आने वाली पीढ़ी हिन्दी साहित्य की पहचान खो रही है. इस तरह हर बार एक वेदना लेकर भारत लौटी-कब तक हिन्दी की उपेक्षा होगी? अंग्रेजी की अपनी जगह है, लेकिन दु:ख यह है कि वह हमारी मातृभाषा की जगह ले रही है। हिन्दी भाषा का प्रयोग ज्यादातर सस्ते व निम्नस्तर के मनोरंजन के लिए हो रहा है। इस स्थिति के प्रति क्षोभ स्वाभाविक है।

समय-समय पर हिन्दी प्रेमियों से मेरी चर्चा होने लगी। खासकर प्रो. नन्दलाल पाठकजी से। उनसे मिलकर हमने 'शब्दम्' संस्था के अन्तर्गत एक दशक तक छोटे बड़े साहित्यिक कार्यक्रम व गोष्ठियों मुम्बई में की।

शिकोहाबाद (उत्तर प्रदेश) में स्थित 'हिन्द लैम्प्स' परिसर में जाती रही हूँ-वहाँ लोगों की रुचि और हिन्दी के प्रति आस्था देखकर 'शब्दम्' के लिए यह जमीन बड़ी उपजाऊ लगी। १७

नवम्बर २००४ को 'शब्दम्' का विधिवत् बीजारोपण हुआ।

इस अंकुर को पल्लवित और पुष्पित करने में जिन लोगों का सहयोग और श्रम मिला है उनमें पहला नाम सुबोध दुबे का आता है, जिन्होंने वर्ष भर 'शब्दम्' के विशिष्ट और उत्कृष्ट कार्यक्रमों के आयोजन का कार्यभार संभाला।

'शब्दम्' का परम सौभाग्य ही है कि प्रो. नन्दलालजी के अलावा उदयप्रताप सिंहजी, सोम ठाकुरजी जैसे महान साहित्यकारों के मार्गदर्शन के साथ-साथ आशीर्वाद व स्नेह भी मिलता रहा है।

श्री मुकुल उपाध्याय तो 'शब्दम्' के लिए एक वरदान ही हैं जिन्होंने 'शब्दम्' को अपने संपादन, तथा कला-कौशल के द्वारा सुन्दर और विशिष्ट रूप दिया।

हिन्द लैम्प्स परिसर और शिकोहाबाद में 'शब्दम्' को एक विराट साहित्यिक परिवार मिला है। सर्वश्री बालकृष्ण गुप्त, बी.पी. सिंघल, ओ. पी. खण्डूड़ी, डा. ओ. पी. सिंह, डा. रजनी यादव, डा. अजय आहूजा, डा. निर्मला यादव, डा. ध्रुवेन्द भदौरिया, डा. श्याम वृक्ष मौर्य, डा. महेश आलोक, डा. शशिकान्त पाण्डेय, मंजर-उल-वासै, कृपाशंकर शर्मा 'शूल', नारायण दास 'निर्झर', अशोक तिवारी। आदि इस परिवार के सदस्यों का योगदान अमूल्य है।

'शब्दम्' की इस पत्रिका में हमारे एक वर्ष के सभी कार्यक्रमों का चित्रमय विवरण प्रस्तुत है। हमारे आमंत्रित साहित्यकारों की कुछ रचनाएँ भी हैं। आशा है आपको यह जानकारी रुचिकर लगेगी।

हम चाहते हैं कि हिन्दी साहित्य, संगीत और कला की सेवा में रत 'शब्दम्' को आपका सहयोग और स्नेह मिलता रहे।

हम आपके सुझावों की प्रतीक्षा करेगें।

किरण बजाज

किरण बजाज

'शब्दम्' ट्रस्ट डीड पर हस्ताक्षर करते हुए न्यासी प्रो. नंदलाल पाठक

अनुक्रम

'शब्दम्' नियामक मंडल

'शब्दम्'-प्रादुर्भाव कथा : नन्दलाल पाठक

'शब्दम्' एक यात्रा : किरण बजाज

ब्रज एवं आंचलिक - १

ब्रज काव्य परम्परा एवं प्रासंगिकता
'गोविन्द को गायन में बसिनो ही भावे है'
'फागुन दुई रे दिना'
'जाओ लला अब हुई गई होरी'
'मइया मेरी कमरी चोरी लई'
सूर संगोष्ठी एवं पदावली गायन
'भाभी ने चिट्ठी भेजी है प्यारे-प्यारे देवर जी'

हिन्दी ग़ज़ल - ९

हिन्दी ग़ज़ल - परम्परा और विकास
काव्य बेला

हिन्दी गीत - १६

'डालन पे फुदकि-फुदकि चिरई चिल्लाई रही'
कवि घाघ को समर्पित - कृषक काव्य सम्मेलन
जुलाहे की चदरिया पर गोटा नहीं होता
साहित्यकार से मिलिए
पावस काव्य संध्या
तुलसी जयंती

शास्त्रीय नाटक एवं नृत्य - २४

नवांकुर संगीत समागम
हास्य व्यंग्य नाटक-''बिजूके''
भावकत्थक

विविधा - २७

संस्कृत वाङ्मय में होली
आध्यात्मिक काव्य गोष्ठी
हिंदी दिवस सप्ताह
'हिंदी का भविष्य' संगोष्ठी
श्रीमती विमला बजाज संगीतालय
पुस्तकालय तथा वाचनालय
चित्रमय प्रस्तुति

परिशिष्ट - ३६

शब्दम आयोजनों में पधारे विशिष्ट

वक्ताओं का संक्षिप्त परिचय

ब्रज़ एवं आंचलिक

पश्चिमी हिन्दी की पाँच बोलियों (खड़ी बोली, बांगरू, ब्रज भाषा, कन्नौजी तथा बुन्देली) में से एक ब्रज भाषा का साहित्य में प्रयोग १६वीं शताब्दी के प्रारम्भ से मिलता है, जब ब्रज प्रदेश में गौड़ीय वैष्णव और वल्लभ सम्प्रदाय अथवा पुष्टि मार्ग के केन्द्र स्थापित हुए। हिन्दी प्रदेश के लगभग समस्त कृष्ण भक्त के कवियों ने अपनी रचनायें ब्रज भाषा में लिखीं। फलस्वरूप ब्रज भाषा हिन्दी प्रदेश की प्रमुख साहित्यिक भाषा बन गयी। १७वीं और १८वीं शताब्दी का हिन्दी रीति साहित्य भी ब्रज भाषा में लिखा गया। भक्तिकाल में इस सरस भाषा का कवियों ने भरपूर प्रयोग किया। ब्रज भाषा की साहित्यिक परम्परा २०वीं शताब्दी में क्षीण होती जा रही है।

'शब्दम्' ने अपने स्थापना दिवस से ही ब्रज भाषा के प्रचार-प्रसार का संकल्प लिया और अपना प्रथम कार्यक्रम इसीको समर्पित किया।

आंचलिकता – आंचलिक रचनाओं में कोई विशिष्ट अंचल व क्षेत्र या उसका कोई एक भाग व गाँव ही वर्णन का विषय होता है। आंचलिकता की सिद्धि के लिए स्थानीय दृश्यों, प्रकृति, जलवायु, त्यौहार, लोकगीत, बातचीत का विशिष्ट ढंग, मुहावरे-लोकोक्तियाँ, भाषा व उच्चारण की विकृतियाँ, लोगों की स्वभावगत व व्यवहारगत विशेषतायें, उनका अपना रोमांस, नैतिक मान्यताएँ आदि का समावेश बड़ी सर्तकता और सावधानी से किया जाना अपेक्षित है। आंचलिक रचना भले ही सीमित क्षेत्र सें सम्बद्ध हो, पर प्रभाव की दृष्टि से व सार्वजनीन हो सकती है, बशर्ते रचनाकार में वैसी प्राणवत्ता व सूक्ष्म-दृष्टि हो, उसके विचारों में गरिमा और कला में सौष्ठव हो। 'शब्दम्' द्वारा आयोजित आंचलिक काव्य गोष्ठी में ब्रज, कन्नौजी, अवधी तथा भोजपुरी रचनाकारों को आमंत्रित किया गया।

ब्रज काव्य परम्परा एवं प्रासंगिकता

'शब्दम्' स्थापना दिवस का श्रीगणेश ''ब्रज काव्य परम्परा एवं प्रासंगिकता'' पर विचार गोष्ठी से हुआ। १७ नवम्बर २००४ को हिन्द परिसर में आयोजित समारोह में सर्वप्रथम शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज तथा हिन्द लैम्प्स के चेयरमैन श्री शेखर बजाज ने अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर श्रीमती बजाज ने कहा कि ''गत २० वर्षों से हिन्दी की उपेक्षा हुई है। साथ ही ब्रज और अन्य समृद्ध बोलियों का साहित्य भी जन साधारण के सामने नहीं आ रहा है ऐसे में एक विचार गोष्ठी की बहुत उपादेयता है।'' तत्पश्चात् भाग ले रहे विद्वानों ने क्रमशः अपने विचार रखे। सूरपीठ आगरा विश्वविद्यालय के आचार्य डा० पी०एन० श्रीवास्तव ने अपने वक्तव्य में कहा कि ''शब्द ब्रह्म श्री राधिकाजी के चरण कमल में धारण किये नूपुर के कलरव में विद्यमान है। आज ब्रज संस्कृति के सर्वविधि संरक्षण की महती आवश्यकता है।'' उ०प्र०हिन्दी संस्थान के उपाध्यक्ष एवं जाने-माने कवि श्री सोम ठाकुर ने कहा कि ''ब्रज भाषा में संसार की स्वीकृति है, इसमें प्रेम है, श्रृद्धा है, भक्ति है, मनुष्य की सम्पूर्णता की स्वीकृति है। लोकजीवन में ब्रजभाषा जन-मन की भाषा है। परम्परा रूढ़ि नहीं विकास का अंश है।'' वृन्दावन शोध संस्थान के निदेशक आचार्य गोविन्द शर्मा ने कहा कि ''श्रीकृष्ण की जन्मभूमि की भाषा ब्रज, मध्यकाल में देश की भाषाओं की सिरमौर रही और लगभग पाँच शताब्दियों तक, उसने देश वासियों के मन एवं आत्माओं पर राज्य किया। उसका साहित्य कालजयी है जो जीवन के आदर्श मूल्यों पर आधारित है।'' इस अवसर पर प्रो० नन्दलाल पाठक तथा श्री बालकृष्ण गुप्त ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये तथा 'शब्दम्' स्थापना के लिए श्रीमती किरण बजाज के प्रति आभार प्रकट किया।

परिचर्चा: ब्रज काव्य परंपरा एवं प्रासंगिकता– दीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन करते प्रो. नंदलाल पाठक

''गोविन्द को गायन में बसिनो ही भावे है''

'शब्दम्' स्थापना दिवस की संध्या, 'ब्रजभाषा पद गायन' से सुगंधित हुई। १७ नवम्बर २००४ को ब्रज क्षेत्र के चयनित गायक-कलाकारों द्वारा प्रस्तुत, इस ब्रज सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारम्भ कत्थक शैली में 'गणेश वन्दना' से हुआ। ''आओ नन्द नन्दना' हे गोविन्द, हे गोपाल' के पदों की भावपूर्ण प्रस्तुति श्रीमती प्रेरणा तलेगांवकर ने की। फिर बारी आयी श्री जगदीशजी की जिन्होंने मीरा के पद गाये। पं० किशनलालजी ने सुमधुर ब्रज गायकी में श्री गोविन्द स्वामी की दार्शनिक रचना 'कैसे पिया की अटारी चढयो जाये... नसैनी बिना' प्रस्तुत कर वातावरण को गम्भीर आध्यात्मिक रस से सराबोर कर दिया। ब्रज भाषा के कुशल चितेरे कवि श्री राधा गोविन्द पाठक ने स्वर ताल की अपनी रचना ''मोहे लागे विरज प्यारो - प्यारो, है कहूँ राधा कहूँ कृष्ण'' का पाठ कर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त हवेली संगीत गायक हरिबाबू कौशिक ने ''क्षीत स्वामी'' के पावन मधुर पदों का गायन किया। ''आगे गाय, पीछे गाय, इत गाय उत गाय'' की गायिकी ने जैसे सचमुच गोपाल कृष्ण की स्मृति को साकार कर दिया। फिर गाया 'काहू जोगिया की नजर लगी'। सुमधुर गायिका श्रीमती शोभा माथुर ने नारायण स्वामी के पदों के गायन से वातावरण को ब्रज भाव से ओतप्रोत कर दिया। ब्रज भाषा पद गायन समारोह का समापन परम्परा अनुसार 'भरोसो दृढ़ इन चरगणन को' के पद के समाज गायन से हुआ, जिसमें समस्त गायक वादक कलाकारों ने भाग लिया।

श्री हरिबाबू कौशिक द्वारा गाया गया क्षीत स्वामी का पद :

''आगे गाय, पीछें गाय, इत गाय, उत गाय; गोविन्द को गायन में बसिवों ही भावे है। गायन सौ ब्रज छायो बैकुंठ को बिसरायो, गायन के हेत गिरकर ले उठायो। ''क्षीत स्वामी'' गिरधारी विट्ठलेश वपुधारी, ग्वारिया का बेस धर गायन में आवे। आगे गाये पाछे गाय....''

श्री राधागोविन्द पाठक द्वारा प्रस्तुत काव्य रचना का एक अंश:

मोहे लागे बिरज प्यारो-प्यारो है।
क्हुँ राधा, कहुँ कृष्णा, कहुँ जमुना को जुगल किनारो है,
मोहे लागे बिरज प्यारो-प्यारो है।
भई चाँदनी सयानी चीर चोरन की ठानी।
बयार शीतल, सुगंध मन्द चाली।
फूल-फूलन के हार गूंथे, आप ही संभार,
कहूँ पाँय पलोटे वनमाली।
कहुँ श्यामा संग कृष्णा,
ग्वाल-ग्वालिन ने आरतौ उतारौ है।
लागे बिरज प्यारौ-प्यारौ है।

मां सरस्वती को माल्यार्पण करते ब्रज कवि पं. किशनलालजी

ब्रजभाषा पद गायन का आनंद उठाते श्रोतागण

पं० किशन लाल जी द्वारा गाया ब्रज लोकगीत :

''नसैनी बिना भायेली, कैसे पिया की अटारी चढ़्यो जाये
काम-क्रोध-मद-लोभ मोह के पहरे दिये लगाय
कर्म जेठ पौरी में सोवे, आड़ी खाट बिछाय
नसैनी बिना.....
कृष्णा सौत बहुत दुख दे रही, ममता रही सताय
अहंकार देवरिया मेरो, वासों पेश न खाय
नसैनी बिना...
माया-सास बहुत सतावे, लज्जा रही सताय
ईर्ष्या ननद को भौंरा टेढ़्यो, मोपे सहो न जाये
नसैनी बिना...
धर्म की बल्ली, कर्म के डन्डा, मेरू दिये लगाय
प्रीतम पट को पल्लो पकड़कर खटखट चढ़ जाये।

हवेली संगीत प्रस्तुत करते श्री हरिबाबू कौशिक

''फागुन दुई रे दिना''

दिनांक २३ मार्च २००५ को हिन्द परिसर में हास्य श्रृंगार की सरस काव्य गोष्ठी का आयोजन हुआ। इस दिन मौसम का मिजाज तो रह-रह कर बिगड़ता रहा, किन्तु रस भीगे श्रृंगार गीत तथा गुदगुदी सहित उन्मुक्त हास्य की प्रस्तुतियों ने श्रोताओं को देर रात तक बाँधे रखा। काव्य गोष्ठी का शुभारम्भ गीतकार विष्णु सक्सेना की 'माँ सरस्वती' की वन्दना से हुआ। फिर आये 'पौफ्लर मेरठी'। उनकी पंक्तियाँ ''मैं जिस हाल में

अपना वक्तव्य देती 'शब्दम्' अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज

हूँ मेरे सनम रहने दो, चाकू मत दो मुझे, कलम रहने दो'' ने श्रोताओं को बरबस हँसाया। कवयित्री मधुमोहिनी ने अपनी काव्य रचना 'रूप को श्रृंगार दे तो जानिये प्यार है, रंग को निखार दे तो जानिये प्यार है' ने पूरे वातावरण में प्यार की मिठास भर दी। गुरू सक्सेना ने जब विज्ञान और गणित जैसे दुरूह विषयों को हास्य की चाशनी चढ़ाकर परोसा तो खिलखिलाहटों की जो झड़ी लगी वो देर तक बनी रही। सक्सेनाजी ने नेताओं ओर नौकरशाही पर जमकर कटाक्ष किया। उनकी कविता 'न राजा रहेगा, न रानी रहेगी, बस हमारी तुम्हारी कहानी रहेगी' ने खूब तालियाँ बटोरीं। कवि ओम व्यास ने इलेक्ट्रोनिक चैनलों के माध्यम

से, आज परोसी जा रही पत्रकारिता की जमकर खिल्लियाँ उड़ायीं। उनकी कविता 'अपन को क्या करना' ने न केवल लोगों को हंसाया, बल्कि कुछ सोचने को भी विवश किया। डा० विष्णु सक्सेना के सुमधुर गीतों ने लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। ''तपती हुयी जमीं है, जलधार बाँटता हूँ, पतझड़ के रास्तों पर मैं बहार बाँटता हूँ'' जैसे तमाम गीतों को श्रोताओं ने खूब सराहा। इस काव्य गोष्ठी में काव्य रसिक श्रोताओं के अतिरिक्त, प्रशासनिक अधिकारियों की बड़ी संख्या में उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

डॉ० विष्णु सक्सेना के गीत-अंश :

रेत पर नाम लिखने से क्या फ़ायदा
एक आई लहर कुछ बचेगा नहीं।
तुमने पत्थर का दिल हमको कह तो दिया
पत्थरों पर लिखोगे, मिटेगा नहीं...।।
आँख खोली तो तुम रूकमणी-सी दिखीं,
बन्द की आँख तो राधिका तुम लगीं।
जब भी देखा तुम्हें शान्त-एकान्त में,
मीराबाई-सी एक साधिका तुम लगीं।
कृष्ण की बाँसुरी पर भरोसा रखो
मन कहीं भी रहे पर डिगेगा नहीं।
रेत पर...।

ओम व्यास 'ओम' की करूणामयी कविता का एक अंश :

माँ चिन्ता है, याद है, हिचकी है,
माँ बच्चे की चोट पर सिसकी है।
माँ चूल्हा, धुआँ, रोटी और हाथों का छाला है,
माँ जिन्दगी की कड़वाहट में अमृत का प्याला है।
माँ त्याग है, तपस्या है, सेवा है,
माँ फूँक से ठंडा किया हुआ कलेवा है।

''जाओ लला अब हुई गई होरी''

होली की फागुनी मादकता को साकार किया, दिनांक २४ मार्च २००५ की सांस्कृतिक संध्या ने। हिन्द परिसर में आयोजित इस रसवन्ती ब्रजहोली की अविस्मरणीय प्रस्तुति का प्रारम्भ 'श्याम लगेव संग डोले' से हुआ। राग बसन्त पर आधारित गीत 'बृज में हरिहोरी मचाई' ने सचमुच में होली का वातावरण रच दिया। ''कोई नार नैना मार गई कजरारे'' ने ब्रज फाग को मंच पर उपस्थित कर दिया। हवेली संगीत के सुप्रसिद्ध गायक श्री हरिबाबू कौशिक ने अपने पदों का गायन किया। तत्पश्चात् राधाकृष्ण के भावपूर्ण नृत्य ने, समारोह में श्रृंगार के साथ आध्यात्मिकता का रस उड़ेल दिया। ''बिहारी जी के कैसे कंटील दोनों नैन' तथा फागुन में मेरे यार गूजा खाइ जाइयो' जैसे फाग गीतों ने माहौल में माधुर्य घोल दिया। कार्यक्रम का समापन बरसाने की लट्ठमार होली से हुआ। इस कार्यक्रम को श्री राजेश शर्मा के निर्देशन में आगरा तथा मथुरा आकाशवाणी के कलाकारों ने प्रस्तुत किया। इनमें प्रमुख थे डा० वन्दना तैलंग, डा० अलका राजेश, श्री मयूर कौशिक, श्री जगदीश ब्रज वासी, श्री ओम प्रकाश डांगुर, सुश्री वन्दना सिंह, श्रीमती मनोरमा तिवारी एवं श्री हरिबाबू कौशिक एवं उनके साथी।

ब्रज कलाकारों के बीच बजाज दंपत्ति

'मइया मेरी कमरी चोरि लई' - सूर जयन्ती

'शब्दम्' द्वारा संस्थापित 'श्रीमती विमला बजाज संगीतालय' में १३ मई २००५ को महाकवि सूरदास की ५२७वीं जयन्ती सूर के सरस पदों से गायन ने मनायी गयी। इसमें उपस्थित छात्र-छात्राओं ने सूर के विभिन्न पदों का गायन किया। इस अवसर पर रवीन्द्र संगीत गायिका श्रीमती पपिया चन्द्रा ने गुरूदेव रवीन्द्र के ब्रजबुलि में रचित पदों को गायन कर सिद्ध किया कि टैगोर को ब्रज संस्कृति से गहरा लगाव था। ''प्रभु मोरे अवगुन चित न धरो'' के पद गायन से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

गुरूदेव श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर ने भानूसिंह 'उपनाम' से ब्रजबुलि में पदावली की रचना की। ब्रजबुलि का मूल ढाँचा मैथिली और बांगला के सहयोग से बना है। इसमें कुछ शब्द मथुरा वृन्दावन की बोली के मिश्रित रहते हैं। इसमें उन्होंने ब्रज एवं बांगला शब्दों का मिला-जुला प्रयोग किया है। गुरूदेव का कथन था कि मेरा अगला जन्म ब्रज भूमि में हो।

भानूसिंह पदावली का पद - अंश :

गहन कुसुम कुंज माझे, मृदुल मधुर बंसी बाजे,
बिसरि त्रास लोक लाजे, सजनि आव आव लो।।

पिनह चारू नील वास, हृदय प्रणय कुसुम रास,
हरिण नेत्रे विमल हास, कुंजवन में आव लो।।

मन्द-मन्द भृंग गूंजे, अजुत कुसुम कुंजे-कुंजे,
फुटल सजनी पुंजे-पुंजे, बकुल जुथि जाति रे।।
आव-आव सजनी वृन्द, हेरब सखी श्री गोविन्द,
श्याम को पदारबिन्द, भानूसिंह बन्दिछे।।

'सूर संगोष्ठी एवं पदावली गायन'

'शब्दम्' की उल्लेखनीय प्रस्तुति के रूप में, वृन्दावन में सम्भवतः पहली बार, महाकवि सूर की जयन्ती मनायी गयी। तिथि थी १३ मई २००५ और स्थान था वृन्दावन शोध संस्थान। इस विद्वत संगोष्ठी एवं पदावली गायन की अध्यक्षता सूर पीठ के पूर्व आचार्य डा० प्रेम नारायण श्रीवास्तव ने की। उन्होंने इस आयोजन के लिए 'शब्दम्' की सराहना करते हुए कहा कि ''सूर ने ब्रज भूमि में सच्चिदानन्द श्री हरि की लीलाओं का गायन कर,

सूर संगोष्ठी एवं पदावली गायन

प्राणियों की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया।'' पं० अच्युतलाल भट्ट ने कहा कि ''सूर दर्शन, वल्लभाचार्य के शिष्य होने के नाते शुद्धौद्वेत सिद्धान्त से परिपूर्ण हैं। सूर ने ब्रह्म के तीनों स्वरूपों का उदाहरण, अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया।'' पं० सुरेन्द्र शर्मा ने विचार प्रगट किये कि

''सूर अपनी रचनाओं के माध्यम से, जगत के सभी मनुष्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सूरदास मानव में व्याप्त बुराइयों को दूर करने के लिए प्रभु की भक्ति एवं शरणागति को ही महामंत्र बताते हैं।'' पं० किशनलाल ने बताया कि सूरदास भगवान श्रीकृष्ण की अष्ट सखियों में से एक 'चंपककला' के अवतार थे। उन्होंने जगत के कल्याण हेतु अपनी रचनाओं का सृजन किया। पं० रामगोपाल शास्त्री, श्री विशनचन्द्र शास्त्री, श्री विजेन्द्र तिवारी एवं विदेशी कृष्ण भक्त कु० सेलीना ने सूर पदावली से चुने हुए पदों का गायन कर संगोष्ठी को पूर्णता प्रदान की। इस अभिनव आयोजन के मुख्य अतिथि थे श्री पुरूषोत्तम लाल धानुका तथा इसमें वृन्दावन के गणमान्य नागरिक, महात्मागण तथा विदेशी भक्तों की उपस्थिति उल्लेखनीय थी।

सूर पदावली गायन को पद :

मानौ भाई धन-धन अंतर दामिनी।
धन-दामिनी दामिनी धन अंतर शोभित हरि ब्रज भामिनी।
यमुन पुलिन मल्लिका मनोहर शरद मुहायी यामिनी।
सुन्दर शशि गुण-रूप-राग निधि अंग-अंग अभिरागिनी
रचौ व रास मिलि रसिक राय सौं मुदित गयी ब्रज भामिनी।
रूप निधान श्याम सुन्दर धन आनन्द मन विश्रामिनी।
खंजन मीन-मराल हरण छवि भाव भेद गज गामिनी।
को गति गुनहि 'सूर' श्याम संग काम विमोध्यौ कामिनी।

''भाभी ने चिट्ठी भेजी है प्यारे-प्यारे देवर जी''

उपरोक्त भोजपुरी कविता की मार्मिक पंक्तियाँ जब सुप्रसिद्ध कवि श्री कैलाश गौतम ने ६ अगस्त २००५ को हिन्द परिसर स्थित कल्पतरू में आयोजित 'आंचलिक काव्य गोष्ठी' में पढ़ीं तो सहसा एक बार पूर्वांचल का घरेलू ग्रामीण परिवेश जीवन्त हो गया। आंचलिक काव्य गोष्ठी का प्रथम भाव - पुष्प डा० राधा पाण्डेय ने अपनी अवधी सरस्वती वन्दना से प्रस्तुत किया - ''जननी सम्भार लाज मोहि अब वर दे''। फिर पढ़ा 'खेतवन-खेतवन झूमे पसरिया, अमिया के डरिया पे कोइलरिया'। ब्रजगीतों की प्रस्तुति की डा० रागिनी चतुर्वेदी ने। उनके ब्रजभाव में रचे-बसे दोहों 'धन्य-धन्य ब्रजभूमि ये, धन्य गोवर्धन धाम, जहाँ प्रेम की वाटिका सुषमा सहित ललाम' ने

श्री कैलाश गौतम का स्वागत श्रीमती किरण बजाज द्वारा

श्रोताओं को रस विभोर कर दिया। कवि कैलाश गौतम की भोजपुरी काव्य रचनाओं ने इस गोष्ठी को सार्थकता प्रदान की। उनके गीत ''पप्पू की दुल्हन की चर्चा गाँव के घर-घर में,'' ''भाभी ने चिट्ठी भेजी है'' ''जब देखो तब बड़की भौजी हंसती रहती है'' आदि ने

श्रोताओं को आंचलिता में डुबो दिया। श्रोताओं की माँग पर कचहरी से आम जनता कैसे त्रस्त है, उसका चित्रण करते हुए अपनी रचना 'मेरे बेटे कचहरी न जाना' पढ़ी। अपने काव्य पाठ का समापन, गंगा की पीड़ा व्यक्त कर रही रचना 'गंगा की बात क्या करूँ गंगा उदास है' से किया। इस अवसर पर अपने प्रारम्भिक वक्तव्य में 'शब्दम्' अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए कहा कि ''यह कैसी विडम्बना है कि आज फिल्म देखने के लिए लोगों के पास समय है, पर साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजनों में जाने का समय नहीं है। समाज, राजनीति के लिए अच्छे साहित्य की आवश्यकता है जो जन साधारण के अन्दर चेतना तथा अच्छे संस्कार पैदा करें तथा जनता की ओर से यह मांग होनी चाहिए कि मीडिया संस्कार-युक्त साहित्य का प्रदर्शन करे।''

श्री कैलाश गौतम की 'बड़की भौजी' रचना के अंश:

जब देखो तब बड़की भौजी हँसती रहती है,
हँसती रहती है कामों में फँसती रहती है।
डोरा देह कटोरा आँखें जिधर निकलती है,
बड़की भौजी की ही घंटों चर्चा चलती है।
चौका-चूल्हा, खेत-क्यारी, सानी-पानी में,
आगे-आगे रहती है कल की अगवानी में।
पीढ़ा देती, पानी देती, थाली देती है,
निकल गई आगे से बिल्ली गाली देती है।
भईया बदल गये पर भौजी बदली नहीं कभी,
सास के आगे उल्टे पल्ला निकली कभी नहीं।
आंगन की तुलसी को भौजी दूब चढ़ाती है,
घर में कोई सौत न आये यही मनाती है।
भैया की बातों में भौजी इतना भूल गयी,
दाल परोसकर बैठी, रोटी देना भूल गयी।

'आंचलिक काव्य गोष्ठी' में पधारे कविगण। श्रीमती रागिनी चतुर्वेदी, श्री कैलाश गौतम, श्रीमती राधा पांडेय, श्री रामेंद्र मोहन त्रिपाठी के साथ अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज तथा सचिव डॉ. सुबोध दुबे

हिन्दी ग़ज़ल

ग़ज़ल का शाब्दिक अर्थ है औरत से प्रेम की बात करना। इस अर्थ ने ग़ज़ल को भाषा की कोमलता, सांकेतिकता, प्रतीकात्मकता और शालीनता दी है। उर्दू कविता में ग़ज़ल का वही स्थान है, जो हिन्दी कविता में गीत का। ग़ज़ल का शेर अपने में पूर्ण होता है। इसके दो बराबर के टुकड़े होते हैं, जिनको मिसरा कहते हैं। दो मिसरों में पूरी बात आ जाती है। यह संक्षिप्तता आधुनिक युग के अनुकूल भी है। 'रदीफ़' और 'काफ़िया' ग़ज़ल के शेरों को जोड़ते हैं। फिर भी कथ्य की दृष्टि से हर शेर स्वतंत्र होता है।

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा। हम बुलबलें है इसकी यह गुलसितां हमारा।।

इस शेर में 'हिंदोस्ताँ' और 'गुलसितां' काफ़िया और 'हमारा' रदीफ़ है। काफिया बदलता रहता है और रदीफ़ चलता रहता है। यह शर्त हिन्दी गज़ल पर भी लागू होती है।

हिन्दी में ग़ज़ल के प्रचार के दो मुख्य कारण हैं। छन्दहीन बुद्धिवादी कविता की शुष्कता की प्रतिक्रिया और गीत के हर छन्द में एक ही भावधारा का विकास करने की शर्त। राग और अनुराग ग़ज़ल का तन और मन है। छन्दहीन ग़ज़ल हो ही नहीं सकती। गेयता ग़ज़ल की जान है। एक गीत का हर पद मुखड़े या टेक के कथ्य का विकास है। ग़ज़ल का हर शेर स्वतंत्र कथ्य है। गीत मुक्तक है तो ग़ज़ल मुक्तक में मुक्तक। ग़ज़ल लिखना भाषा और भाव का शिल्प है। उर्दू में ग़ज़ल की परम्परा है। हिन्दी में कुछ कवियों ने कुछ ग़ज़लें लिखी है। भारतेंदु, प्रसाद, निराला, दिनकर आदि ने कुछ ग़ज़लें जरुर लिखीं पर हिन्दी में ग़ज़ल बारबार आ आकर लौट गई। दुष्यन्तकुमार की ग़ज़लों की सफलता ने हिन्दी में ग़ज़ल की धारा ही बहा दी। फिर भी अधिकांश लेखक उर्दू की नकल पर ग़ज़ल लिखते रहे।

उर्दू भारतीय भाषा है किन्तु उर्दू ग़ज़ल के अधिकांश प्रतीक और मिथक विदेशी हैं। जैसे 'जन्नत', 'जहन्नुम', 'महशर', 'साकी', 'सहारा', 'कयामत' इत्यादि। हम इनसे सुपरिचित नहीं है। इसलिए हम उर्दू ग़ज़ल का पूरा रस नहीं ले पाते। हिन्दी ग़ज़ल में भारतीय प्रतीकों और मिथकों के प्रयोग की प्रवृत्ति बढ़ रही है। भारतीय सामग्री का प्रयोग हिन्दी ग़ज़ल को नवजीवन दे सकता है। आवश्यकता है उर्दू की नकल करने की जगह उर्दू से प्रेरणा लेकर हिन्दी ग़ज़ल को स्वतंत्र रूप देने की, हिन्दी भाषा को अरबी, फारसी के व्याकरण से मुक्त करने की। हमें शब्द उधार लेने हैं, व्याकरण नहीं।

हिन्दी ग़ज़ल - परम्परा और विकास

'शब्दम्' स्थापना दिवस के दूसरे दिन १८ नवम्बर २००४ को अपराह्न २ बजे से 'कल्पतरू' में हिन्दी ग़ज़ल पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रो० नन्दलाल पाठक की अध्यक्षता में हुई इस विचार गोष्ठी में पद्मश्री गोपाल दास 'नीरज', कवि सासंद श्री उदयप्रताप सिंह, डा० कुँअर बेचैन, श्री सोम ठाकुर, डा० उर्मिलेश शंखधर, श्री प्रदीप चौबे एवं डा० शिवओम 'अम्बर' ने भाग लेकर इसे अविस्मरणीय बना दिया। विचार गोष्ठी का प्रारम्भ करते हुए डा० शिवओम 'अम्बर' ने कहा कि - ''सामान्यतः यह समझा जाता रहा है कि ग़ज़ल उर्दू से हिन्दी में आई किन्तु साहित्यिक इतिहास का सजग अध्ययन इस धारणा का प्रत्याख्यान कर देता है। वस्तुतः खड़ी बोली हिन्दी का काव्येतिहास अमीर खुसरो की अभिव्यक्तियों के साथ प्रारम्भ होता है। लगभग सभी मान्य आलोचकों ने अमीर खुसरो को हिन्दी का प्रथम ग़ज़लगो घोषित किया है। अनेकानेक विद्वान अमीर खुसरो की निम्नांकित ग़ज़ल को ही हिन्दी की पहली ग़ज़ल मानते हैं -

जब यार देखा नैन भर दिल की गई चिन्ता उतर,
ऐसा नहीं कोई अजब राखे उसे समझाय कर।

अमीर खुसरो के बाद मतले तथा मक़ते के साथ बहर के अनुशासन में ग़ज़ल कबीर की अभिव्यक्तियों में मिलती है-

हमन हैं इश्क मस्ताना हमन को होशियारी क्या,
रहे आज़ाद या जग में हमन दुनिया से यारी क्या।
कबीरा इश्क के मतलब दुई को दूर कर दिल से,
जे चलना राह नाजुक है हमन सिर बोझ भारी क्या।

भावना व्यक्त करते श्री 'नीरज'

श्री उदयप्रताप सिंह तथा डॉ. कुंअर 'बेचैन'

फ़ारसी काव्य की भूमि ईरान से हिन्दुस्तान की ज़मीन पर पाँव रखते समय ग़ज़ल को चूँकि सन्तों की गोद मिली, उसके प्राथमिक संस्कार पूजा और प्रार्थना वाले थे। प्रीति की जिस मस्ती का ज़िक्र उसके प्रयोगकर्ताओं ने यहाँ किया वह भक्त की अपने आराध्य के ध्यान की मस्ती थी। ग़ज़ल ने अपने पाँवों में विलासिता के घुँघरू बाँधकर नहीं, हाथों में कीर्तन की खड़ताल लेकर हिन्दुस्तान में यात्रा प्रारम्भ की।'' डा० उर्मिलेश शंखधर (अब स्वर्गीय) ने कहा कि – ''यों सातवें दशक से पूर्व भी हिन्दी के कवि ग़ज़लें कह रहे थे लेकिन उनकी ग़ज़लें उर्दू ग़ज़लों के प्रभाव से पूरी तरह मुक्त नहीं थीं। स्व० दुष्यन्त कुमार ने नई कविता का

प्रो. नंदलाल पाठक एवं डॉ. उर्मिलेश शंखधर

पल्ला छोड़ अपनी अनुभूतियों को ग़ज़ल के माध्यम से अभिव्यक्त करने का जो निर्णय लिया, वस्तुतः हिन्दी ग़ज़ल की पहचान और प्रतिष्ठा के लिए यह एक युगान्तकारी घटना थी। आपात्काल से बेहाल पाठकों को इन ग़ज़लों में अपने मन का गुबार फूटता-सा दिखा। यही कारण है कि दुष्यन्त कुमार रातों-रात समकालीन हिन्दी ग़ज़ल के प्रवर्तक रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित हो गए। श्री नन्दलाल पाठक ने जिज्ञासा की कि ग़ज़ल को ग़ज़ल कहें या हिन्दी ग़ज़ल कहें। इसके उत्तर में श्री उदयप्रताप सिंह ने कहा कि– ''यह कोई बड़ा प्रश्न नहीं है जिस पर बहसें हों। हिन्दी ग़ज़ल से मतलब हिन्दी के कवियों द्वारा लिखी या कही ग़ज़ल है। जैसे उर्दू ग़ज़ल, उर्दू कहानी, बंगला नाटक, उड़िया कविता, मराठी ग़ज़ल। चूँकि ग़ज़ल अरबी-फारसी से होती हुई उर्दू में और फिर हिन्दी में आई है इसलिए इसे भाषात्मक पहचान के लिए हिन्दी ग़ज़ल ही कहा जाये।'' हिन्दी ग़ज़ल की भाषा शुद्ध तत्सम् शब्दों वाली ही हो, इस बात को मैं नहीं मानता। ग़ज़ल गीत से अधिक कोमल विधा है और इसकी लोकप्रियता का मूल आधार भाषा की सहजता ही रहा है। यह केवल पठनीय विधा न होकर श्रव्य विधा भी है और अपने संक्षिप्त कलेवर

श्री. प्रदीप चौबे, श्री शिव ओम 'अंबर' एवं कंसल दंपत्ति

में रागात्मक अनुभूतियों एवं युगीन संवेदनाओं की नादात्मक अभिव्यक्ति के कारण सहज ग्राह्य एवं सहज स्मरण्य बनने की क्षमता रखती है, इसलिए इसकी भाषा पुस्तकीय न होकर जीवन और व्यवहार से जुड़ी होनी चाहिए।'' मुम्बई से पधारे प्रो० नन्दलाल पाठक ने कहा कि – ''ग़ज़ल अब हिन्दी गीतिकाव्य का महत्वपूर्ण अंग बन गई है। यह मुक्तक काव्य का युग है और ग़ज़ल मुक्तक में मुक्तक है। ग़ज़ल का विश्वास भाषणबाज़ी में नहीं है, वह तो मौन मर्मस्पर्श है। उर्दू ग़ज़ल के प्रतीक मिथक, संकेत और संदर्भ अधिकांश विदेशी हैं।

उनके बारे में हमारी समझ अधूरी है। आवश्यकता है उर्दू ग़ज़ल से प्रेरणा लेकर भारतीय प्रतीकों, परम्पराओं और मिथकों को जीवन्त करने की, माँजने की और उनकी सांकेतिकता बढ़ाने की। पद्मश्री गोपाल दास 'नीरज' ने कहा कि - ''ग़ज़ल हिन्दी और उर्दू भाषा की अत्यन्त लोकप्रिय विधा है। ग़ज़ल जो कि कभी जुल्फों के पेचों खम और घुंघरूओं की थिरकन में बहुत लम्बे अरसे तक कैद रही वो अब उनसे पूरी तरह मुक्त होकर भीड़ भरे चौराहों पर आकर खड़ी हो गयी। आज की ग़ज़ल राजनीतिक स्वार्थपरता, संकीर्णता, मूल्यहीनता, अराजकता, भ्रष्टाचार और आतंकवाद आदि को बड़े ही मार्मिक शब्दों में व्यक्त कर रही है। कवि सम्मेलनों और मुशायरों में आज ग़ज़ल बहुत सुनी और सराही जाती है। शिक्षित, अशिक्षित और सामान्य जन के पास पहुँचने के लिए भाषा का जो संस्कार और गेयता का जो कौशल वाँछनीय है, वो सब आज की ग़ज़ल हमें दे रही है। आज की ग़ज़ल उस खाई को समतल करने के लिए भाषा का एक ऐसा स्वरूप गढ़ रही है जो हिन्दी और उर्दू से अलग प्रेम की भाषा कही जा सकती है।'' श्री सोम ठाकुर ने कहा कि - ''हिन्दी ग़ज़ल के अपने अस्तित्व के निर्माण हेतु यह बहुत आवश्यक होगा कि वह उर्दू ग़ज़ल की अपेक्षाओं को हिन्दी भाषा के संस्कार में ढालकर नागरी ग़ज़ल को वह चुम्बकत्व प्रदान करने की शक्ति उत्पन्न करे जो सम्प्रेषण के लिये आवश्यक है। साथ ही कथ्य के स्तर पर भी ऐसा परिवर्तन करना होगा जिससे लगे कि नागरी ग़ज़ल ने पुरानी सीमाओं को तोड़ा है और कथ्य को अधिक सम्पन्नता प्रदान की है।'' डा० कुँअर 'बेचैन' ने गोष्ठी का समापन करते हुए कहा कि अमीर खुसरो के बाद बली एवं कुली कुतुबशाह ने दखिनी हिन्दी में ग़ज़लें कहीं। वैसे तो ग़ज़ल, ग़ज़ल ही है। फिर भी कभी-कभी सुविधा के आधार पर भी नाम दे दिये जाते हैं। जैसे गीत को दिया गया। हिन्दी साहित्य के हर युग में कवियों ने ग़ज़लें कहीं। श्री भारतेन्दु जी 'रसा' उपनाम से ग़ज़लें लिखते थे। ग़ज़ल लेखन में क्रान्तिकारी बदलाव श्री दुष्यन्त कुमार ने किया। जिनके नये प्रतीक भाषा और कथ्य ने केवल हिन्दी के वरन् उर्दू के शायरों को भी प्रभावित किया और आज हिन्दी ग़ज़ल सामाजिक विषमताओं, विद्रूपताओं और आक्रोश को भी अपना विषय बना रही है। गोष्ठी के अन्त में 'शब्दम्' अध्यक्षा श्रीमती किरण बजाज ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया और कहा कि ''आज की गोष्ठी बहुत विचारोत्तेजक थी। समय-समय पर 'शब्दम्' ऐसे आयोजन करता रहेगा।''

हिन्दी ग़ज़ल के चुने हुए शेर:

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही।
हों कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए।

-दुष्यन्त कुमार

मुझ को उस वैद्य की विद्या पर तरस आता है।
भूखे लोगों को जो सेहत की दवा देता है।

-नीरज

तुम्हारे दिल की चुभन भी जरूर कम होगी।
किसी के पाँव से काँटा निकाल कर देखो।

-डा० कुँअर बेचैन

बेटियाँ जब से बड़ी होने लगी हैं मेरी।
मुझको इस दौर के गाने नहीं अच्छे लगते।।

-उर्मिलेश

मेरे दिल के किसी कोने में इक मासूम-सा बच्चा।

बड़ों की देख कर दुनिया बड़ा होने से डरता है।।

-राजेश रेड्डी

शाम होने को है बेचारा कहाँ जायेगा?
बूढ़े बरगद से पपीहे को उड़ाते क्यों हो।

उदय प्रताप सिंह

कैसी मुश्किल में पड़ गया हूँ मैं।
अपने दर्पण से लड़ गया हूँ मैं।।

-सोम ठाकुर

ये सियासत की तवायफ का दुपट्टा है।
ये किसी के आँसुओं से तर नहीं होता।।

- डा० शिवओम 'अम्बर'

उमड़ते आँसुओं को आँख ही पी ले तो बेहतर है।
हमेशा आँसुओं की पहुँच में आँचल नहीं होता।।

-प्रो० नन्दलाल पाठक

'काव्य बेला'

'शब्दम्' स्थापना दिवस के अवसर १८ नवम्बर २००४ को हिन्द परिसर हिन्दी के प्रतिष्ठित कवियों सर्वश्री गोपालदास 'नीरज', सर्वश्री नन्दलाल पाठक, श्री उदयप्रताप सिंह, श्री सोमठाकुर, डा० कुँअर 'बेचैन', डा० उर्मिलेश 'शंखधर', डा० शिवओम 'अम्बर' तथा श्री प्रदीप चौबे की गरिमामयी उपस्थिति में, 'काव्य बेला' का आयोजन किया गया। शब्दम् की अध्यक्षा, श्रीमती किरण बजाज ने सरस्वती विग्रह पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। आमन्त्रित कवियों का, श्री शेखर बजाज ने

दीप प्रज्जवलित करते श्री 'नीरज', डॉ. उर्मिलेश शंखधर

अभिनन्दन कर काव्य बेला को गति प्रदान की। कवि सोम ठाकुर की हिन्दी वन्दना ने 'शब्दम्' के भावार्थ को अभिव्यक्ति दी। सांसद कवि श्री उदय प्रताप सिंह ने अपनी हिन्दी गज़लों से वाह-वाही लूटी। ''जिसकी धरती -चांद -सितारे -आसमां, उसका मन्दिर तुम बनाओगे सोचो जरा, वो अजर है अमर है सबके घर-घर में बसा है, उसको मन्दिर की जरूरत! सोचो जरा' के बाद उन्होंने पढ़ा ''हर अमावस को दीवाली में बदल सकता है जो एक से दूसरा दीपक जला ले जायेगा''। डा० उर्मिलेश 'शंखधर' ने जिन्दगी की सच्चाई को कुछ यूँ बयान किया- ''बेवजह दिल पे कोई बोझ न भारी रखिये, जिन्दगी जंग है इस जंग को जारी रखिये, कितने दिन जिन्दा रहे इसको न गिनिये साहिब, किस तरह जिन्दा रहे इसकी शुमारी रखिये'', ''रिश्तों की भीड़ में वो तन्हा खड़ा रहा, नदियाँ थीं उसके पास वो प्यासा खड़ा रहा।'' कवि डा० कुँअर 'बेचैन' कुछ नये तेवर में दिखायी दिये 'खनक उठती है टकराकर भी उनसे चूड़ियाँ सारी, कड़ों से सीखिये रिश्ते निभाने की हुनरदारी; अगर मिल जाये तो इंसान को इनसे मिला दीजिए, मुहब्बत -इंसानियत

–दोस्ती–वफादारी'! हास्य व्यंग्य के मैनाक पर्वत कहे जाने वाले कवि प्रदीप चौबे ने श्रोताओं को देर तक गुदगुदाया, हँसाया। उनकी हास्यमय पंक्तियाँ, ''के०जी० टू का बच्चा था, उसके नाजुक कंधों पर टू के०जी० का बस्ता था.....'' ''वस्ल की रात चरका दिया उसने, बातों में टरका दिया उसने''! काव्य समारोह का संचालन कर रहे, कवि डा० शिवओम 'अम्बर' ने गाँव के दर्द को कुछ यूँ बयां किया – 'धूल–धक्कड़ हो, धुआँ हो – धुंध हो बेशक वहाँ, मेरा अपना गाँव फिर भी मेरा गाँव है''! सुमधुर गीतकार कवि सोम ठाकुर ने गज़ल पढ़ी– 'उजली सुबह के नाम पर धोखे हमें बेहद मिले, संकल्प कब पर्वत हुऐ, कब लोग आदमकद मिले'! प्रो० नन्दलाल पाठक ने कवि की वेदना व्यक्त करते हुए कहा – 'शायरी खुदकुशी का धंधा है, लाश अपनी है और अपना कंधा है, आईना बेचता फिरा शायरे, उस नगर में जो अंधा है' 'शब्दम्' अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने अपनी अनुभूति पूर्ण काव्यांजलि प्रस्तुत की 'उनके कहने से हम अपनी हँसी न छीनेंगे, न अपने गम का हिसाब उनसे पूछेंगे, न जायेंगे उनके तट पर, न हाथ बढ़ायेंगे, अपनी नैया हम खुद डूबने से बचायेंगे' अन्त में कवि 'नीरज' को पूर्ण मनोयोग से सुना गया। 'इतने बदनाम हुए हम तो इस जमाने में, तुमको सदियाँ लग जायेंगी हमें भुलाने में' सुनकर श्रोताओं को वास्तव में यथार्थ की अनुभूति हुई। उनकी कालजयी रचनाओं जैसे 'कारवाँ गुजर गया गुबार देखते रहे' आदि के साथ इस काव्य बेला का स्मरणीय समापन हुआ।

काव्यबेला– काव्य पाठ करते श्री उदयप्रताप सिंह

हिंदी वंदना प्रस्तुत करते श्री सोम ठाकुर

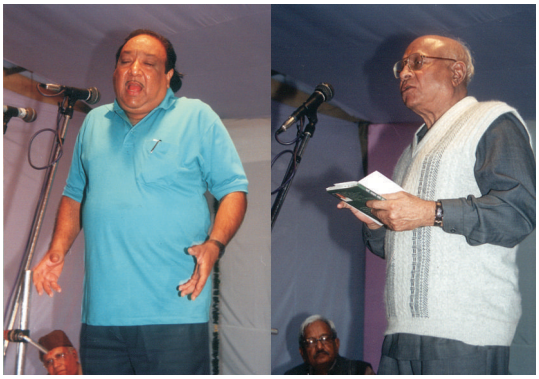

रचना प्रस्तुत करते श्री प्रदीप चौबे एवं प्रो. नंदलाल पाठक

काव्यबेला का आनंद लेते श्रोतागण

काव्य बेला में पढ़ी गयी रचनाओं के कुछ अंश

अब तो मज़हब कोई ऐसा भी चलाया जाए।
जिसमें इन्सान को इन्सान बनाया जाए।
जिसकी खुशबू से महक जाए पड़ोसी का भी घर।
फूल इस किस्म का हर सिम्त खिलाया जाए।

– गोपालदास 'नीरज'

कोई दीवाना होठों तक जब अमरित घट ले आया।
काल बली बोला मैंने तुझसे बहुतेरे देखे हैं।
पर्वत, सागर, बिजली, बादल गर्जन-गुंजन मिले जुले।
'सोम' कभी क्या तूने निराला बाल बिखेरे देखे हैं।

– सोम ठाकुर

वो घटायें, वो फुहारें, वो कनक भूल गये,
बच्चे बारिश में नहाने की ललक भूल गये।
ओस कुछ ऐसी पड़ी अब के बरस धरती पर,
लॉन के फूल भी सब अपनी महक भूल गये।

– डा० उर्मिलेश

अग्नि के गर्भ में पला होगा,
शब्द जो श्लोक में ढला होगा।
दृग मिले कालिदास के उसको,
अश्रु उसका शकुन्तला होगा।
दर्प ही दर्प हो गया है वो,
दर्पनों ने उसे छला होगा।
भाल कर्पूरगौर हो बेशक,
गीत का कंठ साँवला होगा।।

– शिवओम 'अम्बर'

तेरी हर बात चलकर यूँ भी मेरे जी से आती है,
कि जैसे याद की खुशबू किसी हिचकी से आती है।
ये माना आदमी में फूल जैसे रंग हैं लेकिन,
'कुँअर' तहज़ीब की खुशबू मुहब्बत ही से आती है।

– डा० कुँअर 'बेचैन'

बच्चों का मन होता है उपजाऊ मिट्टी की तरह,
बीज क्या बोओगे इसमें बागवां, सोचो ज़रा।
बदले युग में आदमी का बदला-बदला
दिल-दिमाग,
कौन सुनता है पुरानी दास्तां, सोचो ज़रा।
जिन्दगी ताजा हवा और धूप की मोहताज है,
बन्द करके बैठे हो क्यों खिड़कियाँ, सोचो ज़रा।
जब बनाने वाला सबका एक है फिर फर्क क्यूँ,
आदमी और आदमी के दरम्यां, सोचो ज़रा।

– उदयप्रताप सिंह

सपने सजा रहा था कि यौवन गुज़र गया।
जागा तो देखता हूँ कि जीवन गुज़र गया।।
कल तितलियाँ दिखीं तो मेरे हाथ बढ गये।
मुझको गुमान था मेरा बचपन गुज़र गया।।
मल्हार के सुर कंठ से फूटे भी नहीं थे।
मुश्किल से मिले साज़ कि सावन गुज़र गया।
मन में छिपी हुई है हवस कीर्ति की अभी।
हाँ कामिनी गुज़र गई, कंचन गुज़र गया।

– प्रो० नन्दलाल पाठक

कुछ समारोह समाचार के मुहताज रहे
कुछ गले हैं जो महज हार के मुहताज रहे
और हैं जो तेरे रूखसार के मुहताज रहे
हम तो बस यार, तेरे प्यार के मुहताज रह

–प्रदीप चौबे

हिन्दी गीत

गीत काव्य की शायद सबसे पुरानी विधा है। गीत मनुष्य की मात्र भाषा है। महाकवि निराला ने गीतिका की भूमिका में कहा है – ''गीत – सृष्टि शाश्वत है। समस्त शब्दों का मूल कारण ध्वनिमय ओंकार है। इसी अशब्द – संगीत से स्वर–सप्तकों की भी सृष्टि हुई। समस्त विश्व स्वर का पूँजीभूत रूप है।'' भगवत्शरण उपाध्याय ने गीत की परिभाषा करते हुए लिखा है – ''गीतिकाव्य कविता की वह विधा है, जिसमें स्वानुभूति–प्रेरित भावावेष की आर्द्र और तरल आत्माभिव्यक्ति होती है।'' इसी सन्दर्भ में केदारनाथ सिंह कहते हैं – ''गीत कविता का एक अत्यन्त निजी स्वर है... गीत सहज, सीधा, अकृत्रिम होता है।''

हिन्दी गीत के विविध रूप हैं यथा – प्राचीन गीत, आधुनिक गीत, वैयक्तिक गीत, राष्ट्रीय गीत, प्रगतिवादी गीत, नवगीत, प्रचार गीत, लोक शैली के गीत एवं ग़ज़ल गीत।

'डालन पें फुदकि फुदकि चिरई चिल्लाइ रही'

'लेखनी' एवं 'शब्दम्' संस्था के तत्वावधान में बसन्त काव्य गोष्ठी का आयोजन दिनांक १४ फरवरी, २००५ को हिन्द लैम्पस परिसर में सम्पन्न हुआ । ब्रज विभूति स्व पं० भोजराज चतुर्वेदी जयन्ती समारोह २००५ के अन्तर्गत आयोजित इस काव्य गोष्ठी में बसन्त के आगमन के साथ ही साथ समसामयिक घटनाओं एवं मुद्दों को भी कवियों ने अपनी ओजस्वी वाणी से निनादित किया ।

'डालन पें फुदकि फुदकि चिरई चिल्लाइ रही' की पंक्तियों के माध्यम से जहाँ ओमप्रकाश बैवरिया ने बसन्त को मंच पर उतार दिया, वहीं ब्रह्मानन्द की पंक्तियों ने सुनामी की भयावह त्रासदी की ओर सभी का ध्यान खींचा। विवेक 'विस्मय' की पंक्तियों 'सर्द मौसम की ये शायद रवानी लगती है' ने काफी तालियाँ बटोरी, वहीं डा० धुवेन्द्र भदौरिया की कविता 'इस ऋतुराज बसन्त का' ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। यतीश चतुर्वेदी ने जहाँ आपसी भाई चारे को दर्शाया, वहीं विजय चतुर्वेदी की पक्तियाँ 'अब न जहरे सितम घोलिए' ने फिजा में बासन्तिक माधुर्य घोल दिया। बैजनाथ 'रघु' ने मंहगाई को लेकर अच्छा कौतुक उत्पन्न किया, जबकि प्रशान्त उपाध्याय की पंक्तियाँ अपने गाम्भीर्य के कारण सराही गयी।

प्रशान्त उपाध्याय के कुछ गीत अंश:

गीत सत्यम् शिवम् गीत है सुन्दरम्।
वेद की ये ऋचा गीत शाकुन्तलम्।
गीत है लक्षणा गीत है व्यंजना।
गीत है आस्था गीत है भावना।
जब मिलें ये हमारे तुम्हारे अधर।
गीत है प्रीति की अनछुई कामना।
भाव तट पर खड़ा कल्पना को लिए।
शब्द का कर रहा स्वागतम् स्वागतम्।।

ब्रह्मानन्द झा का गीत – अंश:

चलो चलें मन दूर कहीं हम तुम सुधियों के गाँव।
सांस-सांस हो गन्धिल जैसे अमराई की छाँव।
केसर की क्यारी हो
रसवन्ती फेरे हों
प्रीति के हिंडोले में
मीत के बसेरे हों
उल्लासों के घुँघरू बाँधे थिरकें बहके पाँव।
चलों चलें मन दूर कहीं हम तुम सुधियों के गाँव।

विविधा

'राम की शक्तिपूजा' का छाया-मंचन

'राम की शक्तिपूजा' छाया-मंचन में भाग लेने वाले शिक्षा प्रकाशालय के छात्रगण, शिक्षक, लिटिल लैम्प्स के शिक्षकगण एवं स्टाफ क्लब के सदस्य

कविघाघ को समर्पित कृषक काव्य सम्मेलन

ग्रांम स्यारमऊ ''बाबा की बगीची'' में अमराई तले २१ मई २००५ को 'शब्दम्' की पहल पर आयोजित कृषक काव्य सम्मेलन में न केवल ग्रामीण रचनाकारों को उत्साहित किया बल्कि कवि 'घाघ' की रचनाओं के स्मरण से एक बार पुनः आधुनिक सन्दर्भों में उनके मौसम विज्ञान की सार्थकता सिद्ध की।

श्री रामवीर सिंह 'भ्रमर शास्त्री' की गणेश वन्दना से प्रारम्भ हुए इस कार्यक्रम में खितौली के श्री राजवीर, लाछपुर के श्री ब्रजेश कुमार, आमरी के श्री खजान सिंह ने अपने गाँव की सुगन्ध से रचे-बसे गीतों को प्रस्तुत किया।

सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि श्री आराम सिंह शास्त्री ने 'घाघ' के प्रारम्भिक जीवन पर प्रकाश डाला तथा उन्हें प्रकृति का कवि बताया।

डा० ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने भी अपनी रचनाओं का पाठ किया जिसे उपस्थित किसानों द्वारा बहुत सराहा गया। कार्यक्रम में आसपास के गाँवों के किसान काफी संख्या में उपस्थित थे और उन्होंने इस काव्य सम्मेलन का भरपूर आनन्द उठाया।

डा० ध्रुवेन्द्र भदौरिया की 'महात्मा जटायु' रचना के कुछ पद:

कटे हुए पंख और घायल शरीर था।
धरती का कण-कण लोहू से लाल था।
सिया का हरण हाय रोक नहीं पाया मैं
बार बार बस यही मन में मलाल था।
वेदना से विद्ध हुए पड़े हुए थे गिद्धराज
सांसें थी गिनी चुनी बहुत बुरा हाल था
लुप्त होती स्मृति में काल की थी पदचाप
आंखें खोल देखा तो दशरथ का लाल था

श्रद्धा से श्राद्ध में बुलाने होंगे गिद्ध जिन्हें
भोजन में मांसाहार जगदीश चाहिए
गिद्धों को पेय पसन्द नहीं अन्य कोई
लाल लाल लोहू का भरानदीश चाहिए।
जिन बाहुओं ने वैदेही का हरण किया बल से
भोज में भुजायें वही पूरी बीस चाहिए
जिन नयनों ने निहारी है जानकी कुदृष्टि से
बीस नयन नोचने को दस शीश चाहिए।

सीता के हित लड़ा इसीलिए पुण्य बढ़ा
गिद्ध को प्रसिद्ध किया परोपकारी काम नें
नाम लिया राम का तो खुल गया स्वर्गद्वार
दशरथ का लोक दिया राम जी के नाम ने
भानुकुल के भानु ने अर्ध्य दिया आँसुओं से
जटाओं से जटायु की धूल झाड़ी राम ने
स्वर्ग के लिए तो उनके दर्शन ही काफी थे
जाने कौन धाम दिया राम के प्रणाम ने।

जटायु के सामने सीता का हरण था
भीष्म की समस्या थी द्रोपदी के चीर की
अधम जीव होकर जटायु तो जूझ गये
फड़की न भुजा किन्तु भीष्म जैसे वीर की
इसीलिए भीष्म को तो लेने आये यमराज
रघुराज ने गति की गिद्ध के शरीर की
वाणों की शैया पर सोए भीष्म अनन्तकाल
मिल पाई गिद्ध को ही गोद रघुवीर की।

विविधा

ब्रह्माबाद में दीप प्रज्जवलित कर 'शब्दम्' वाचनालय का उद्घाटन करते हुए ग्रामीणजन

''जुलाहे की चदरिया पर गोटा नहीं होता''

कबीर की ६०७वीं जयन्ती पालीवाल महाविद्यालय में २२ मई २००५ को विचार गोष्ठी के रूप में मनायी गयी जिसका विषय था - ''कबिरा खड़ा बाजार में''।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री हरिओम मित्तल ने कहा कि ''कबीर की रचनाओं में आर्थिक मनोवैज्ञानिक तथ्यों की भरमार है और उन्होंने बड़े सरल ढंग से लोक भाषा में अपनी बात कही है।'' डा० श्याम वृक्ष मौर्य ने 'कायावीर को कबीर' कहा। वहीं डा० कप्तान सिंह ने कबीर वाणी को वर्तमान परिपेक्ष में सभी समस्याओं के हल के लिए उपयुक्त बताया।

शायर शकील वारसी ने अपनी गज़ल 'किसी दौर में, किसी मुल्क में कोई उसके जैसा हुआ नहीं, जो किसी मज़हब का न हो सका पर किसी मजहब से जुदा नहीं' पढ़ कबीर को अभिव्यक्ति दी। डा० ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने पढ़ा - 'हे ढाई आखर के पंडित, सन्तों की शुचिता से मंडित, तुम औघड़ बन पी गये पीर, युग बुला रहा आओ कबीर'।

श्री विष्णु स्वरूप मिश्र ने अपना कबीरपन्थी गीत 'रंग-बिरंगे खेल-खिलौने बचपन के सब छूट गये, कुछ तो जान-बूझकर तोड़े, कुछ अनजाने टूट गये' प्रस्तुत कर श्रोताओं का मन मोह लिया। श्री गौरव यादव ने अपनी व्यंग रचना प्रस्तुत की। श्री महेशचन्द्र मिश्र ने पढ़ा 'सारे आडम्बर का पर्दाफाश किया थो,पाखण्डी धर्म के ठेकेदारों को बेनकाब किया था,' प्रो० आर०पी० जैन ने अपनी काव्य रचना प्रस्तुत की तथा श्री मंजर-उल-वासै ने कबीर की व्याख्या करते हुए उनके बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। अध्यक्ष डा० ओ०पी० सिंह ने अपनी गज़ल पढ़ी।

पालीवाल महाविद्यालय में 'शब्दम्' के संयोजन में आयोजित कबीर जयंती में भाग लेने वाले वक्तागण व आयोजक.

संगोष्ठी का समापन, वरिष्ठ कवि नारायण दास 'निर्झर' की दार्शनिक कविताओं से हुआ। उनकी इन पंक्तियों ने 'ये जैसी भी निर्झर, ओढ़ ले कबिरा की चादर को, जुलाहे की चादर पर गोटा नहीं होता' इस विचार गोष्ठी को अपनी पूर्णता प्रदान की।

कबीर जयन्ती के अवसर पर पढ़ी गयी वरिष्ठ कवि श्री नारायण दास 'निर्झर' की गज़ल :

''कुटी में सन्त की महलों सा परकोटा नहीं होता
यहाँ पर शाह-सफी में बड़ा छोटा नहीं होता।

तिज़ारत कीजिए यदि चाह हो तुमको मुनाफे की
मोहब्बत के जुनूँ में कुछ नफा टोटा नहीं होता।

परीक्षा जिन्दगी की पास करना है बहुत मुश्किल
कि इसमें एक भी उत्तर रटा घोटा नहीं होता।

ये कैसे सन्त हैं जिनसे न माया छूट पाती है
जो सच्चे सन्त हैं उन पर तवा लोटा नहीं होता।

ये जैसी भी है ''निर्झर'' ओढ़ ले कबिरा की चादर
को,जुलाहे की चदरिया पर ज़री गोटा नही होता।''

'साहित्यकार से मिलिए'

दिनांक ३० जुलाई २००५ को हिन्द परिसर स्थित 'कल्पतरू' में 'साहित्यकार से मिलिए' कार्यक्रम की प्रथम प्रस्तुति में चर्चित गीतकार एवं कवि डा० बुद्धिनाथ मिश्र ने अपनी कविताओं का सुमधुर पाठ कर श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध कर दिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मंगलाचरण से हुआ। संस्था की अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने डा० बुद्धिनाथ मिश्र को हरीतिमा कलश भेंट कर उनका स्वागत किया तथा अपना अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए कहा कि, ''हमें आशा है कि साहित्यकार से मिलिए कार्यक्रम श्रृंखला को नयी गति मिलेगी एवं ऐसे गीतकारों कवियों को एक मंच मिलेगा, जिन्होंने हिन्दी कविता को नई ऊँचाई प्रदान की हो।''

कार्यक्रम का संचालन कर रहे डा० सुबोध दुबे ने डा० बुद्धिनाथ मिश्र का विस्तृत परिचय कराया एवं हिन्दी कविता एवं नवगीत में उनके योगदान के लिए किये जा रहे प्रयास को सबके समक्ष प्रस्तुत किया।

इस कार्यक्रम में डा० बुद्धिनाथ मिश्र ने अपनी कई कविताओं का सुमधुर पाठ किया, जिसमें उनकी चर्चित कविता 'एक बार फिर जाल फेंक रे मछेरे, जाने किस मछली का', 'एक किरन भोर की उतराई आँगने, रखना इसको संभालकर' आदि थी।

पर्यावरण को समर्पित एक मुक्तक 'तुमने कोठी महल बनाया नाती-पोतों की खातिर, पानी नहीं बचाया नाती-पोतों की खातिर' कविता पढ़ी, जिसे श्रोताओं ने खूब सराहा।

डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र का हरीतिमा कलश भेंट कर स्वागत करतीं श्रीमती किरण बजाज.

डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र

एक परिचय: हिन्दी नवगीत के प्रमुख स्तम्भ, चर्चित गीतकार, कवि।

कृतियाँ : जाल फेंक रे मछेरे, जाड़े में पहाड़, नोहर में नाहर, शिखरिणी, छायापात, अव्यय अतीत, मानसी

सम्मान/पुरस्कार: निराला सम्मान, कविरत्न, साहित्य सारस्वत, साहित्य गौरव, दुष्यन्त कुमार अलंकार, पुश्किन सम्मान (मास्को)।

सम्प्रति : मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) ओ०एन०जी०सी०, देहरादून।

उनकी एक कविता के कुछ अंश

एक किरन भोर की
उतराई आँगने
रखना इसको सँभाल कर,
लाया हूँ माँग इसे
सूरज के गाँव से
अँधियारे का खयाल कर।
अंगीठी ताप-ताप
रात की मनौती की,
दिन पूजे धूप सेंक-सेंक
लिपटा कर बचपन को
खाँसते बुढ़ापे में,
रख ली है पुरखों की टेक
जलपाखी आस का
बहुराया ताल में
खुश है लहरें उछालकर।
सोना बरसेगा
जब धूप बन खिलेगा मन,
गेंदे की हरी डाल पर...।

पानी पर एक मुक्तक :

तुमने कोठे महल बनाये, नाती पोतों की खातिर।
उद्योगों के कमल खिलाये, नाती पोतों की खातिर।
इस आपाधापी में प्यारे, तुम इतना लाचार हुए,
पानी नहीं बचाया तुमने, नाती पोतों की खातिर।

'पावस काव्य संध्या'

दिनांक ४ अगस्त २००५ को हिन्द परिसर स्थित 'कल्पतरू' में 'पावस काव्य संध्या' का आयोजन किया गया। इसमें समस्यापूर्ति कार्यक्रम भी रखा गया।

'शब्दम्' की अध्यक्षा श्रीमती किरण बजाज ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में रचनाकारों का आह्वान किया कि ''हिन्दी के प्रति आम जनों में उत्पन्न हो रही हीनभावना को दूर करें और भावी पीढ़ी को हिन्दी साहित्य के साथ जोड़ें। भाषा ही संस्कार जगाती है, भाषा ही संवेदना पैदा करती है, इसलिए जरूरी है कि हम सभी हिन्दी साहित्य से जुड़ें।'' समस्या पूर्ति के अन्तर्गत उन्होंने अपनी कविता पढ़कर समस्या पूर्ति के शीर्षक ''श्याम सुनहरे मेघ तुम्हारे, आंगन नया सजाते हैं'' को पूर्ण किया।

समस्या पूर्ति : यह एक प्राचीन साहित्यिक विधा है जिसमें किसी छन्द कविता के दिये गये शब्द अथवा वाक्य को उसके पूर्व अथवा पश्चात् सार्थक शब्दों की योजना करके पूरे नये छन्द के रूप का निर्माण किया जाता है। हिन्दी काव्य को पुनः लोकप्रिय करने के लिए शब्दम् समय-समय पर समस्या पूर्ति का आयोजन करता रहता है।

श्री रामेंद्र मोहन त्रिपाठी का स्वागत करतीं किरण बजाज

पावस काव्य संध्या में दी गयी समस्या श्रीमती किरण बजाज की प्रस्तुत कविता 'शून्य' से ली गयी थी

''गगन, तुम कहाँ हो शून्य?
दिन में धूप, रात को चंदा,
विहगों का है साथ भोर से
साँझ ढले तारों के झुरमुट
श्याम सुनहरे मेघ तुम्हारे
आँगन नया सजाते हैं।
बूँद-बूँद भरकर तुमको,
स्वर्गिक सुषमा दे जाते हैं।''

त्पश्चात् पं० विजय चतुर्वेदी ने 'बन जाते अवरोध कभी जब, उग्र रूप धर अब आते हैं, कितनी जाने लेकर जाते, क्या हिसाब रख पाते हैं, उजड़े घर सड़कों पर पानी, फिर हम कैसे कह पायेंगे, श्याम सुनहरे मेघ तुम्हारे आंगन नया सजाते हैं' पढ़ा।

श्री प्रशान्त उपाध्याय ने समस्या पूर्ति के अन्तर्गत 'मन के कोने का सूनापन फिर कोई बांटने लगा, टूटा सा बटन उम्र की कमीज का जाने क्यों टांकने लगा, हाँ ऐसा ही होता है अक्सर जब दिन पावस के आते हैं, श्याम सुनहरे मेघ तुम्हारे आंगन नया सजाते हैं' प्रस्तुत की।

डा० ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने समस्यापूर्ति में अपनी रचना 'बलदाऊ वन वृक्ष धरा पर छत्र रूप तन जाते हैं, मनसुख जैसे मन के बादल श्याम सखा बन जाते हैं, राधा जैसी चपला का मुख गरज-गरज चमकाते हैं, श्याम सुनहरे मेघ तुम्हारे आंगन नया सजाते हैं' पढ़कर खूब वाहवाही लूटी।

चर्चित कवि नारायण दास 'निर्झर' ने समस्यापूर्ति के अन्तर्गत अपनी चार रचनायें प्रस्तुत कीं जिसमें एक थी- 'तुम क्यों आते नहीं,

तुम्हारे स्वप्न हमें नित आते हैं, श्याम तुम्हारी विरह व्यथा में ब्रजजन सब अकुलाते हैं आँगन रोज़ रंगोली पूरूँ गीत सजाऊँ देहरी पर, श्याम सुनहरे मेघ तुम्हारे आंगन नया सजाते हैं।'

श्री रामेन्द्र मोहन त्रिपाठी ने समस्यापूर्ति के अन्तर्गत 'नभ के अधर धरा को छूने बादल बनकर आते हैं, तृप्ति प्यास के हवन कुंड में, मोती से झर जाते हैं, पंचरत्न के पूजा घर में बिजली फूल चढ़ाने, श्याम सुनहरे मेघ तुम्हारे आँगन नया सजाते हैं' की सरस प्रस्तुति करके वातावरण को काव्य सुगन्ध से भर दिया।

पावस काव्य संध्या का शुभारम्भ युवा कवि श्री विवेक यादव के सरस्वती वन्दना ''हे माँ शारदे, हे माँ शारदे, हे वीणावादिनी माँ, तू सद्विचार दे।'' से हुआ। उन्होंने पावस पर अपनी कविता ''सावन के रिमझिम, मस्त हुआ मन मयूर, घूर-घूर के घटा छाने लगा है'' पढ़ी। प्रशान्त उपाध्याय ने पावस पर अपनी रचना 'साजिशों की बाढ़ ढहा कर ले गयी मेरे अस्तित्व के मकान की कच्ची दीवारें' को प्रस्तुत किया। वहीं श्री विष्णु स्वरूप मिश्रा ने 'मछली-मछली कितना पानी, जितनी कीमत उतना पानी, पानी की अनमोल कहानी' को सुनाया तो पानी और मेघ के सौन्दर्य की गहराइयों को छूआ। डा० ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने अपने पावस के दोहे 'ज्येष्ठ मास तपती रही धरती बन बरखा के वरदान की पड़ने लगीं फुहारें, शून्य शराबी हो गया, टकराता है जाम' प्रस्तुत किया तो सावन की फुहार की तरह बूँदों की बरसात को लोगों ने महसूस किया। नारायण दास 'निर्झर' ने अपने पावस गीत 'झुरमुठों में भागती हिरणी सरीखी धूप और पीछे भागती बादल चढ़ी बरसात' को प्रस्तुत

'पावस काव्य संध्या' में अपनी रचना का पाठ करते डॉ. ध्रुवेंद्र भदौरिया.

किया। तत्पश्चात् विशिष्ट कवि के रूप में पधारे हिन्दी के सुप्रसिद्ध गीतकार श्री रामेन्द्र मोहन त्रिपाठी ने अपनी पावसीय रचनाओं ''आँगन में बरसें मल्हारें, कजरी गाने लगीं फुहारें, बन्दनवार आरती गाये, बिना पिया के कैसे लगते तू क्या जाने मन'', ''तुम किरण बनकर मेरे भुवन में रहो, मैं पवन बनकर पहरा लगाता रहूँ'' आदि का पाठ कर श्रोताओं को तृप्त किया। उनकी आज की चर्चित रचना ''ये लड़कियों के हाथ में रूमाल से बादल, कमाल है, कमाल है, कमाल दर कमाल है'' के साथ इस पावसीय काव्य संध्या का समापन हुआ।

श्री रामेन्द्र मोहन त्रिपाठी की काव्य रचना का एक अंश:

'नीची घाटी ऊँचे पर्वत ऊपर नील गगन।
बिना प्रिया के कैसे लागे, तू क्या जाने मन
आंगन में बरसें मल्हारें, कज़री आये खोल किवारे।
तन के घाट उमर का पानी, पानी में फिसलन।
चलती हवा उझकती खिड़की, ऊड़ती गंध मराल सी।
छप्पर की औलाती छेदें, छाती हल्के फाल सी।
बूँदों के लहरे पे कैसे, खुल जाये तुरपन।
बिना प्रिया के कैसे लागे, तू क्या जाने मन।

'तुलसी जयन्ती'

दिनांक १२ अगस्त २००५ को, तुलसी जयन्ती के अवसर पर निम्नांकित विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गयी :

१.तुलसी की प्रासंगिकता
२.साहित्य में तुलसी का अवदान
३.संस्कारों की रक्षा में तुलसी की भूमिका

इस निबन्ध प्रतियोगिता में समस्त बड़ी संख्या में छात्र-छात्रायें, नागरिक, सुधीजनों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहे –
प्रीति गुप्ता (प्रथम), प्रेमलता गुप्ता (द्वितीय), दीप्ति सिंह (तृतीय), प्राची बैजल एवं दीपिका ठाकुर (सांत्वना पुरस्कार)।
विजेताओं को प्रमाणपत्र एवं पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

तुलसी जयंती पर आयोजित विचार गोष्ठी में सांसद उदयप्रताप सिंह, सर्वश्री खंडूरी, डॉ. आर. यादव, डॉ. पांडेय, उमाशंकर शर्मा, डॉ. महेश आलोक, डॉ. ध्रुवेंद्र भदौरिया, हरीश गुप्ता, पंकज चतुर्वेदी, अविरल मिश्र, डॉ. सुबोध दुबे, सुरेशचंद्र यादव आदि.

विविधा

५ सितंबर २००५ 'शिक्षक दिवस' पर वरिष्ठ शिक्षक श्री हरिश्चंद्र पालीवाल का 'शब्दम्' की ओर से सम्मान

हिंदी दिवस के अवसर पर कार्यक्रम के प्रारंभ में सरस्वती-वंदना करती शिक्षा प्रकाशालय की छात्राएं.

हिंदी दिवस के अवसर पर प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में प्रश्न पूछते 'शब्दम्' सचिव डॉ. सुबोध दुबे.

शास्त्रीय संगीत, नाटक एवं नृत्य

भारतीय संगीत के मुख्य रूप से तीन प्रकार किये जाते हैं। शास्त्रीय संगीत, सुफल संगीत और लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत वह है जो शास्त्रीय नियमों के अन्तर्गत प्रचलित है। इसमें ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, टपपप, दादरा आदि प्रकार हैं। भजन-गीत-ग़ज़ल आदि शैलियों को सुगम संगीत के नाम से पुकारा जाता है। इसमें कुछ शैलियों को शास्त्रीय आधार प्राप्त है। कुछ को नहीं किन्तु लोक संगीत, शास्त्र के बन्धनों से सर्वथा मुक्त है। शास्त्रीय संगीत में गायन, वादन एवं नृत्य तीनों समाहित हैं।

नाटक साहित्य की वह विधा है जिसका परीक्षण रंगमंच पर होता है और रंगमंच युग विशेष की जमरूचि और तत्कालीन आर्थिक व्यवस्था के आधार पर निर्मित होता है। संस्कृत नाटकों के युग से ही 'आर्दशोन्मुख' तथा 'यथार्थोन्मुख' नाटक की दो पद्धतियाँ हमारे देश में सदा से चली आ रही हैं। यूनान तथा अन्य देशों की भाँति, भारत में भी नाटक का आख्यान एवं संवाद, सामवेद से गीत यर्जुवेद से अभिनय तथा अथर्ववेद से रस लेकर, पाँचवे वेद, नाट्य वेद की रचना की। नाटक के प्राचीनकालीन रूप अक प्रायः लुप्त हो चुके हैं। पश्चिमी नाटकों के अनुकरण पर ही अब प्रायः सभी नाटक खेले जाते हैं। बीसवीं सदी के प्रारम्भ के पश्चात् नाटक का विकास उसके एकांकी और अनेकांकी, दोनों रूपों में हुआ है।

शब्दम् उपरोक्त कार्यक्रमों के आयोजन के लिए कटिबद्ध है।

नवांकुर संगीत समागम

उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी लखनऊ एवं शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक १७ फरवरी २००५ को शोध संस्थान परिसर में 'शब्दम्' के सहयोग से नवांकुर संगीत समागम के अन्तर्गत भारतीय शास्त्रीय संगीत का गायन, वादन एवं नृत्य का सुमधुर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में कानपुर से आये अमरजीत जैन ने राग वागेश्वरी में वायलन वादन कर श्रोताओं को सुमधुर संगीत के वातावरण में डुबो दिया। तबले पर संगत उनके भाई अभयजीत जैन ने की। मथुरा के ध्रुपद गायक मुकेश कौशिक ने गायन प्रस्तुत कर श्रोताओं की तालियां बटोरीं। बदायूं से आई कु० खुशबू ने तबले पर एकल वादन कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कानपुर की कत्थक नृत्यांगना कु० दीपशिखा विश्वास ने पारंपरिक कत्थक प्रस्तुत करते हुए अपनी मनमोहक प्रस्तुति दी। तबले पर संगत रामबाबू भट् व कपिल देव मिश्रा ने की। गायन व हारमोनियम पर रमणलाल सेठ ने संगत की।
कार्यक्रम का निर्देशन संगीत नाट्य अकादमी लखनऊ के संगीत सर्वेक्षण सहायक रविचन्द गोस्वामी ने किया।
इस मौके पर वृन्दावन शोध संस्थान के निदेशक प्रो० गोविन्द शर्मा ने स्वागत भाषण करते हुए कहा कि ''कला में संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्य का आनन्द वही ले सकता है जो विद्वान हो लेकिन संगीत का आनन्द अज्ञानी भी ले सकता

नवांकुर संगीत समागम में वायलिन पर राग वागेश्वरी प्रस्तुत करते श्री अमरजीत जैन

है। वर्तमान दौर में भारतीय शास्त्रीय संगीत का ह्रास तथा पाश्चात्य संस्कृति को प्रश्रय मिल रहा है।'शब्दम्' के सहयोग से ऐसे आयोजनों की महति आवश्यकता है।''

हास्य व्यंग्य नाटक 'बिजूके'

दिनांक १२ अगस्त २००५ को हिन्द लैम्प्स परिसर स्थित स्टाफ क्लब में एक हास्य व्यंग्य नाटक का मंचन किया गया। इस नाटक में हास्य के साथ-साथ आज के भ्रष्टाचार के युग में रिश्वत के आधार पर अयोग्य व्यक्ति बड़े पदों पर पहुँच जाते हैं उन पर सीधा कटाक्ष किया गया।

यह एक ऐसे अधिकारी की कहानी है जो ऊँची कुर्सी पर बैठ तो गया परन्तु योग्यता की कमी के कारण अपने मातहत के सुझावों का मुहताज बना रहता है। ऐसे ही किसी सुझाव पर प्रशासन की मुहर लगाकर किसानों पर थोप देता है। इस गलत निर्णय का लाभ उठाकर उसके मातहत चालाक

'बिजुके' नाटक का एक दृश्य

कर्मचारी अधिकारी को फंसाकर स्वयं उस कुर्सी पर बैठना चाहता है परन्तु सी०आई०डी० विभाग के हस्तक्षेप के कारण दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है।

व्यंग्य व हास्य से भरपूर इस एकांकी नाटक ने पूरे १ घंटा १५ मिनट तक दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर रखा। ''बिजूके'' के निर्देशक श्री ओ०पी० खण्डूड़ी तथा सह निर्देशक श्री अनिल मिश्रा ने बड़ी कुशलता से इसका संचालन किया। बिजूके के कहानी लेखक श्री ए०के० मिश्रा तथा संयोजक श्री वी०एम० राठी थे।

'भाव कत्थक'

'शब्दम्' की ओर से हिन्द परिसर में 'भाव कत्थक' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन श्रीमती किरण बजाज ने दीप प्रज्वलित कर तथा कुमारी गीतिका बजाज ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया।

कुमारी सुरीली सक्सेना ने तराना, कत्थक का लखनवी अंदाज व वृन्दावन के गोवर्धन लीला प्रस्तुत की। कुमारी पूनम व सुरीली ने भाव कत्थक प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर आगरा की डा० नीरू शर्मा ने तबले पर अपना एकल वादन, रामकृष्ण ने बांसुरी पर तथा डा० ईश्वर चन्द्र ने गायिकी व कत्थक गुरू रमन सिंह धाकरे ने पढंत प्रस्तुत कर दर्शकों का मन मोह लिया।

भाव कत्थक प्रस्तुत करती कु. सुरीली एवं श्रीमती पूनम

विविधा

शब्द शक्ति की आराधना के लिए शब्दम् की स्थापना स्वयं में भारतीय संस्कृति की आध्यात्मिकता का स्वाभाविक रूप से संस्पर्श करती है। साथ ही शब्दम् में ध्वनि, नाद एवं अर्थ तीनों का सम्मिलित रूप है। । इसके अन्तर्गत आध्यात्मिक काव्य गोष्ठी, राष्ट्रभाषा हिन्दी को शिक्षण एवं बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त करने के लिए प्रतियोगिताओं एवं गोष्ठी का आयोजन किया गया। पठनीय पुस्तकें, पत्रिकायें जन साधारण तक पहुँच सकें, इसके लिए पुस्तकालय एवं वाचनालय की स्थापना की गयी है। प्रारम्भ से ही छात्र-छात्राओं को शास्त्रीय संगीत के प्रति संस्कारित किया जा सके, 'विमला बजाज संगीतालय' की स्थापना की गयी है।

संस्कृत वाङ्मय समस्त भारतीय एवं यूरोपीय भाषाओं की जननी है। सारे विश्व के भाषा वैज्ञानिक इस बात पर एक मत हैं कि संस्कृत ही भाषायी विकास का मूल स्रोत रही है। यह स्वाभाविक सत्य है कि दूध का विकार दही ही होता है, वैसे ही मूल संस्कृत से धीरे-धीरे सारी भाषायें विकसित हुई हैं। जहाँ तक राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रश्न है वह संस्कृत से प्राकृत, प्राकृत से पाली, पाली से अपभ्रंश और अपभ्रंश से पिंगल शास्त्र की काव्यमय परिधि को छूते हुए खड़ी बोली और फिर आज की हिन्दी तक का स्वरूप ग्रहण करती है।

विविधा में उल्लिखित उद्देश्यों के आयोजनों को सम्मिलित करने का प्रयास किया गया है

''संस्कृत वाङ्मय में होली''

उपरोक्त कथन को, २७ मार्च २००५ को, हिन्द परिसर स्थित, कल्पतरू में आयोजित ''संस्कृत वाङ्मय में होली'' विषय पर अपने विचार प्रगट करते हुये डा० इच्छाराम द्विवेदी ने संस्कृत साहित्य से उल्लेखित किया।

इस गोष्ठी की गरिमामयी अध्यक्षता, परमपूज्य भागवत भास्कर श्रीकृष्णचन्द्र जी शास्त्री 'ठाकुरजी' ने की। उन्होंने कहा कि यद्यपि भागवत में कोई होली का वर्णन नहीं है अपितु रसों के समूह रास का वर्णन है और कालान्तर में वहीं से प्रेरणा लेकर असंख्य कवियों ने होली रस-धार बहायी।

इस गोष्ठी के अन्य विद्वान थे डा० रमाकान्त शुक्ल जिन्होंने अपने शोधपूर्ण वक्तव्य में बताया कि 'प्रियदर्शिका', 'रत्नावली', 'कुमार सम्भव' सभी में रंग का वर्णन आया है। कालिदास रचित 'ऋतुसंहार' में पूरा एक सर्ग ही 'बसन्तोत्सव' को अर्पित है। 'भारवी', 'माघ' सभी ने बसन्त की खूब चर्चा की है। 'पद्माकर' ने तथा 'पृथ्वीराज रासौ' में होली का वर्णन है। महाकवि सूरदास ने तो बसन्त एवं होली पर ७८ पद लिखे हैं।

गोष्ठी के प्रारम्भिक वक्तव्य में डा० द्विवेदी ने, होली का अग्नि के सन्दर्भ में उपयोगिता की दृष्टि से उल्लेख किया। 'भविष्य पुराण' तथा अन्य ग्रन्थों के उद्धरणों से उन्होंने होली उत्सव के उद्भव और विकास की लम्बी परम्परा पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि असंस्कृत एवं अप्राकृतिक समाज

गोष्ठी अध्यक्ष श्री 'ठाकुरजी'

को सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक बनाना ही, होली महोत्सव का प्रयोजन है।

अन्त में श्री ठाकुरजी के मुखारबिंद से निकले अमृत रस ने परिवेश में आध्यात्म रस की गंगा बहा दी।

सूर रचित होली का पद :

नन्द नन्दन वृषभान किशोरी राधा मोहन खेलत होरी।
श्री वृन्दावन अति ही उजागर वरन्-वरन् नवदम्पति भोरी।
श्यामा उतै एकल ब्रज वनिता इतै श्याम रस रूप लचौरी।
कंचन की पिचकारी छूटत छिरकत ज्यौ सच पावै गोरी।
झुंडन जोरी रहि चन्द्रावली गोकुल में कुछ खेल मचौरी।
सूरदास प्रभु फगवा दीजै चिर जीवो राधा बरजोरी।

'संस्कृत वाङ्मय में होली' संगोष्ठी में विचार व्यक्त करते डॉ. रमाकांत शुक्ल. साथ में हैं डॉ. इच्छाराम द्विवेदी

'आध्यात्मिक काव्य गोष्ठी'

इस विशिष्ट काव्य गोष्ठी का आयोजन १२ अप्रैल २००५ को श्री कृपाशंकर शर्मा 'शूल' की अध्यक्षता में 'शब्दम्' के सौजन्य से, शिकोहाबाद नगर में किया गया।

गोष्ठी के प्रारम्भ में श्री मंजर-उल-वासै ने भगवान शिव के निराकार एवं साकार स्वरूप की उपासना करते हुए मानव जीवन के महत्ता की विषद व्याख्या एक सुन्दर निबन्ध पढ़कर की। तत्पश्चात् कवि गोष्ठी का दौर प्रारम्भ हुआ। जहाँ श्री राजीव शर्मा ने गुरू की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए अपनी रचना इन भावों में प्रस्तुत की- 'गुरू चरणों की रज लगाके मस्तक, सीखा है मैंने चलना, जबसे खुले ज्ञान के चक्षु, सीखा है चिन्तन करना, कितना दुखित रहा ये हृदय कितनी इसमें कसक भी, फिर भी गम के आँसू पीकर, सीखा है मैंने हसना'। श्री सुनील यादव ने जीवन के विकार को दूर करने के लिए ईश्वर को इन भावों में देखा, 'हे ईश्वर, करके मुझे अस्तित्वहीन, कर लो मुझे तुम अपने में विलीन, फैलाकर अपना ज्ञानमयी प्रकाश, मिटा दो मेरा अहंकार, द्वेष ईर्ष्या और इस जीवन के विकार'।

श्री ओमप्रकाश बेवरिया ने जाति-पाँति पर प्रहार करते हुए तथा हर हाथ को काम मिलने की दुहाई देते हुए कहा कि 'जाति पांति धर्म का न मान होना चाहिए, आदमी को आदमी का ज्ञान होना चाहिए, निडर होकर देशवासी सब दिशाओं में रहे, हाथ जो खाली है उनमें काम होना चाहिए।' श्री विजय चतुर्वेदी ने ईश्वर को समर्पित अपनी रचना 'थक उठे दो नयन विह्वल, राह तेरी देखते, मौन है दो अधर निश्चल, राह तेरी देखते।' को प्रस्तुत किया। सांस्कृतिक मूल्यों में हो रही गिरावट को इंगित करते हुए श्री उत्तम सिंह राठौर ने अपनी लेखनी को इन रूपों में व्यक्त किया-''उच्च दर्शन से प्रदर्शन हो गया। दूरदर्शन अंग दर्शन हो गया। मूल्य इतने गिर गए अब संस्कारों के, वासना की आग ही अब प्रेमदर्शन हो गया।'

डा० ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने प्रभु को समर्पित अपनी लेखनी को इन भावों में व्यक्त किया- 'ओला सागर में गिरा, गिरकर हुआ विलीन, बिन्दु समाया सिन्धु में, दीनबन्धु में दीन'। वहीं श्री बैजनाथ सिंह 'रघु' ने अपने विचार इन शब्दों में व्यक्त किये-'कुछ भी करके जतन, आजा करने मिलन। हम तो आबाद कर देंगें तेरा रूहानी चमन।'' इसी सन्दर्भ में कृपाशंकर शर्मा 'शूल' ने कहा- 'नाम रूप से परे अनादि अनंत अगोचर, एकोहम बहुस्याम भाव साकार सगोचर'। वहीं मंजर-उल-वासै ने अपनी लेखनी में ''कतरा कुछ है दरिया कुछ, बन्दा कुछ है मौला कुछ'' प्रस्तुत किया।

श्री राजीव शर्मा 'आधार' की एक कविता :

आ गया फिर बहुप्रतीक्षित पल विदा का,
पर विदा देते हुए, रोये बहुत हम।।
राह में हम भी चले सबकी तरह।
किन्तु अवरोधक बने काँटे मिले।
हम महक पावन लुटाते ही रहे,
कंटकों में भी गुलाओं से खिले।
जागते ही काँपकर मन रह गया।
सब सपन झूठे हुए, सोये बहुत हम।।

श्री मंजर-उल-वासै द्वारा प्रस्तुत की गयी युगलिका के अंश :

क़तरा कुछ है, दरिया कुछ
बन्दा कुछ है, मौला कुछ

अन्त नहीं है इच्छाओं का
पर साँसों की है सीमा कुछ

हिन्दी दिवस सप्ताह

हिन्दी दिवस के अवसर पर विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन

हिन्दी दिवस (१४ सितम्बर २००५) के अवसर पर हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत विविध प्रतियोगितायें आयोजित की गयीं। समस्त प्रतियोगितायें हिन्द परिसर स्थित शिक्षा प्रकाशालय में दोपहर २ बजे से प्रारम्भ हुईं। प्रतियोगिताओं की तीन श्रेणियाँ, जिसमें कनिष्ठ वर्ग (कक्षा ८ तक), मध्यम वर्ग (कक्षा ९ से १२ तक) तथा वरिष्ठ वर्ग (कक्षा स्नातक से स्नातकोत्तर तक) थीं।

विजयी पुरस्कार प्राप्तकर्ता

प्रतियोगिताओं में भाग लेते छात्रगण.

प्रस्तुत सूची में प्रथम आने वाले विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं :

क्रम सं०	दिनांक	प्रतियोगिता	विजेता (वरिष्ठ वर्ग)
१.	८ सितम्बर २००५	हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता	शिवांग शर्मा
२.	९ सितम्बर २००५	हिन्दी निबन्ध लेखन	दीपिका ठाकुर
३.	१० सितम्बर २००५	हिन्दी कहानी लेखन	दीप्ति सिंह
४.	११ सितम्बर २००५	हिन्दी काव्य प्रतियोगिता	पवन कुमार यादव
५.	१२ सितम्बर २००५	हिन्दी श्रुतिलेख प्रतियोगिता	दीप्ति सिंह
६.	१३ सितम्बर २००५	हिन्दी गद्य एवं पद्य वाचन प्रतियोगिता	अशोक यादव

क्रम सं०	दिनांक	प्रतियोगिता	विजेता (मध्यम वर्ग)
१.	८ सितम्बर २००५	हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता	अबू तजीम
२.	९ सितम्बर २००५	हिन्दी निबन्ध लेखन	हिमांशु यादव
३.	१० सितम्बर २००५	हिन्दी कहानी लेखन	हिमांशु यादव
४.	११ सितम्बर २००५	हिन्दी काव्य प्रतियोगिता	प्रीति गुप्ता
५.	१२ सितम्बर २००५	हिन्दी श्रुतिलेख प्रतियोगिता	हिमांशु यादव
६.	१३ सितम्बर २००५	हिन्दी गद्य एवं पद्य वाचन प्रतियोगिता	राहुल यादव

क्रम सं०	दिनांक	प्रतियोगिता	विजेता (कनिष्ठ वर्ग)
१.	८ सितम्बर २००५	हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता	गौरव जादोन
२.	९ सितम्बर २००५	हिन्दी निबन्ध लेखन	गौरव प्रताप सिंह
३.	१० सितम्बर २००५	हिन्दी कहानी लेखन	अभिषेक पचौरी
४.	११ सितम्बर २००५	हिन्दी काव्य प्रतियोगिता	अमन यादव
५.	१२ सितम्बर २००५	हिन्दी श्रुतिलेख प्रतियोगिता	गगन कुमार
६.	१३ सितम्बर २००५	हिन्दी गद्य एवं पद्य वाचन प्रतियोगिता	अनुराग राठौर

'हिन्दी का भविष्य संगोष्ठी'

दिनांक १४ सितम्बर २००५ को हिन्दी दिवस के अवसर पर विचार गोष्ठी का आयोजन "हिन्दी के भविष्य पर चर्चा" करने के लिए किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि, प्रसिद्ध साहित्यकार श्री बालकृष्ण गुप्त ने कहा कि हिन्दी को हम अपने व्यवहार व आचरण में लायें, हिन्दी का भविष्य उज्जवल है। हिन्दी हमारी राष्ट्रीयता और हमारे संस्कारों से जुड़ी है।

उन्होंने 'शब्दम्' द्वारा किये जा रहे साहित्यिक-सांस्कृतिक प्रयासों की सराहना की। इससे पूर्व विचार गोष्ठी का शुभारम्भ डा० ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने सरस्वती वन्दना एवं हिन्दी गीत से किया। इस अवसर पर उपस्थित विभिन्न विद्वानों यथा - डा० चन्द्रपाल शर्मा 'शीलेश', डा० श्यामवृक्ष मौर्य, डा० महेश आलोक, श्री मंजर-उल-वासै, श्री बी०पी० सिंघल आदि ने अपने विचार प्रकट किये। जिसका निष्कर्ष था कि -

'हिन्दी के विकास में कोई कमी नहीं पर हिन्दी भाषियों ने त्रिभाषा फार्मूला अपनाने में दक्षिण की कोई भाषा नहीं सीखी। हमें दक्षिण भारतीय भाषाओं के प्रति भी उदार होना चाहिए। हिन्दी ही ऐसी भाषा है जिसमें जैसा बोलते हैं वैसा लिखते हैं। जब तक हिन्दी व्यावसायिक भाषा नहीं बनेगी, तब तक उसका पूर्ण विकास नहीं होगा। भारत में विदेशी कम्पनियाँ अपने उत्पादों का नाम भारत की विभिन्न भाषाओं में लिखकर विज्ञापित करते हैं। हमें भी हिन्दी को लोकप्रिय बनाने के लिए अन्य भारतीय भाषाओं को सम्मान देना होगा।'

विचार गोष्ठी का सफल संचालन नगर के जाने-माने हिन्दी सेवी कवि साहित्कार श्री मंजर-उल-वासै ने किया। उन्होंने अपने प्रारम्भिक वक्तव्य में 'शब्दम्' को हिन्दी सप्ताह सार्थक रूप से मनाने के लिए बधाई दी।

'हिंदी का भविष्य' संगोष्ठी में भाग लेने वाले वक्तागण मुख्य अतिथि श्री बालकृष्ण गुप्त के साथ.

"गांधीजी ने लोगों को याद दिलाया कि शरम की बात यह नहीं है कि हम अपनी जबान बोलें, शरम की बात यह है कि हम अपनी जबान को भूल जाएं।"

- मौलाना आज़ाद

श्रीमती विमला बजाज संगीतालय

इस संगीतालय का उद्घाटन ११ अप्रैल २००४ को श्री शेखर बजाज, चेयरमेन हिन्द लैम्प्स ने अपनी माँ स्व. श्रीमती विमला बजाज की स्मृति में किया। इस अवसर पर आगरा के प्रसिद्ध सितार वादक श्री अरविन्द एवं तबला वादक श्री मनोज शर्मा ने अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

श्रीमती विमला बजाज स्वयं में शास्त्रीय संगीत की पारखी एवं सितार वादक थीं। उनका मुम्बई में आवास, देश-विदेश के संगीतकारों का प्रिय स्थल रहा और उन्होंने सदैव साहित्य संगीत एवं कला के विकास में अपना योगदान दिया।

इस संगीतालय में छात्र-छात्राओं को नियमित रूप से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा दी जाती है तथा समय-समय पर भारतीय संगीत के कार्यक्रमों का आयोजन होता रहता है।

'श्रीमती विमला बजाज संगीतालय' की नाम पट्टिका का अनावरण करती हुई श्रीमती किरण बजाज

'विमला बजाज संगीतालय' में विभिन्न वाद्ययंत्रों पर गायन-वादन करती छात्राएं

पुस्तकालय तथा वाचनालय

इसकी स्थापना हिन्द परिसर स्थित स्टाफ क्लब में की गयी है। पुस्तकालय में हिन्दी साहित्य की चुनी हुई पुस्तकें उपलब्ध हैं। वाचनालय में विभिन्न साहित्यिक पत्र एवं पत्रिकायें मंगायी गई हैं। जन साधारण को स्तरीय हिन्दी साहित्य, उपलब्धता हो सके, यह शब्दम् का प्रयास है।

हिंद परिसर स्थित 'शब्दम्' वाचनालय में पुस्तकों-पत्रिकाओं का पाठन करते पुस्तक प्रेमी

चित्रमय प्रस्तुति

'शब्दम्' वाचनालय का निरीक्षण करते हुए श्री पुरूषोत्तमलाल धानुका।

कृष्ण लीला प्रस्तुत करता कृष्ण-स्वरुप

वसंत काव्य गोष्ठी में आमंत्रित कवियों के साथ श्रीमती किरण बजाज.

शिक्षा प्रकाशालय के छात्र–छात्राओं द्वारा भक्त प्रह्लाद नाटक का छायामंचन

हिंदी दिवस मनाते लिटिल लैम्प्स के छात्र–छात्राएं एवं शिक्षिकाएं

कवियित्रि पूर्णिमा पाठक के साथ 'शब्दम्' अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज एवं हिंद परिसर की काव्यरसिक महिलाएं

प्रतिभा प्रह्लाद द्वारा यंगस्कालर में भरत नाट्यम् की प्रस्तुति

श्रीमती शोभना नारायण द्वारा कत्थक नृत्य की प्रस्तुति

श्री शेखर बजाज मैगसेसे व जमनालाल बजाज पुरस्कार विजेता श्री राजेंद्र सिंह के साथ 'शब्दम्' वाचनालय में

पर्यावरण विद् श्री चंडीप्रसाद भट्ट के साथ श्रीमती किरण बजाज व डॉ. सुबोध दुबे 'शब्दम्' वाचनालय में

संगीत प्रतियोगिता (उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी के सहयोग से) में गायन प्रस्तुत करती कु. वृंदा मोहन

परिशिष्ट

काव्य समारोह में उपस्थित क्रमश: श्री बी.पी.सिंहाल, श्री ओमप्रकाश 'आदित्य', श्रीमती सरिता शर्मा, श्रीमती किरण बजाज, श्री शेखर बजाज, श्री सोम ठाकुर, श्री उदयप्रताप सिंह, श्री उमाशंकर शर्मा, डॉ. सुबोध दुबे एवं श्री एस. एस. भभाटिया.

'शब्दम्' आयोजनों में पधारे विशिष्ट वक्ताओं का संक्षिप्त परिचय

डा० प्रेमनारायण श्रीवास्तव डी.लिट.

-पूर्व आचार्य सूर पीठ एवं डा० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।

-ब्रज साहित्य, भारतीय धर्म-दर्शन और साहित्य की अनेक पुस्तकों के रचनाकार एवं सम्पादक, विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित, अनेक विद्वत गोठियों एवं सन्त-सम्मेलनों का संयोजन एवं संचालन।

प्रो० गोविन्द शर्मा

-पूर्व निदेशक वृन्दावन श्शोध संस्थान, मंत्री स्वामी हरिदास सेवा संस्थान, हिन्दी विभागाध्यक्ष, प्राचार्य पद से सेवा निवृत्त।

-कवि, कहानीकार, ललित निबन्धों के रचनाकार, विभिन्न सांस्कृतिक रचनाओं के सम्पादक, ब्रज विभूति से सम्मानित, ब्रज संस्कृति के सम्माननीय विद्वान।

भागवत्भास्कर पं० श्रीकृष्णचन्द्रजी शास्त्री 'ठाकुरजी'

-अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त भागवताचार्य, ७०० से अधिक भागवत सप्ताहों का सफल अनुष्ठान, भारतीय संस्कृति एवं वाङमय के उच्चकोटि के विद्वान।

पद्मश्री गोपालदास 'नीरज'

-पिछले ६ दशकों से हिन्दी के सर्वोच्च प्रसिद्धि प्राप्त गीत कवि।

-लगभग चालीस पुस्तकों के रचयिता देश-विदेश में हिन्दी की कीर्ति पताका फहरा रहे हैं।

-समकालीन गीत की धारा के स्वर्णिम अध्याय, चिन्तन और दर्शन को गीत में ढालना और आखर-आखर ज्योति दीप बालना उनकी सहज सिद्धि है।

श्री सोम ठाकुर

-पचपन वर्षों से साहित्य साधना में रत् हिन्दी के प्रवक्ता रहकर समीक्षक तथा खड़ी बोली एवं ब्रज भाषा से सभी भाषाओं में सृजन करते हैं।

-रेडियो, टी०वी० सम्मानित पुरस्कृत होकर सम्प्रति उ०प्र० हिन्दी संस्थान के मनोनीत कार्यकारी उपाध्यक्ष पद पर आसीन।

-कुन्द के पुष्पों की धवलता, कल्पना की तरलता और हृदय की सरलता के प्रतिरूप हैं

डा० कुँअर 'बेचैन

-पिछले चार दशकों से गीत-नवगीत एवं ग़ज़ल विधा में सृजन करते हुए नयी पीढ़ी के सर्वाधिक पुस्तकों के रचयिता तथा ग़ज़ल की 'छान्दसिक' व्याख्या में प्रवीण, पूर्व प्राध्यापक तथा समीक्षक हैं।
-कविता की कांवर को अपने कंधे पर लेकर चलने वाले, सत्यम् शिवम् सुन्दरम् के मधुर गायक हैं।

डा० उर्मिलेश शंखधर

-स्व० प्राध्यापक डा० उर्मिलेश शंखधर विगत तीस वर्षों से हिन्दी के सभी विधाओं के विख्यात कवि तथा समीक्षक एवं अनेकानेक पुस्तकों के रचयिता।
-विभिन्न पुरस्कारों से विभूषित।
-गीत से सम्पृक्त ओजतत्व के प्रभावी आख्यान थे, उनके राष्ट्रवादी स्वर यदि हमारे स्वाभिमान व्याख्यान हैं तो उनके गीत हमारे साँस्कृतिक वैभव के सोपान हैं।

श्री ओमप्रकाश आदित्य

-पिछले चार दशकों से अधिक हिन्दी हास्य के विविध रूपों में हास्य व्यंग्य की रचना निरन्तर करने वाले रचनाकार।
-पत्र-पत्रिकाओं में लेखन, समाज की विसंगतियों को शब्द देने का सराहनीय कार्य।

श्री प्रदीप चौबे -

-देश-विदेश के हास्य व्यंग्य के प्रख्यात रचनाकार ग़ज़लकार।
-पिछले तीन दशकों से हास्य व्यंग्य ग़ज़ल की पुस्तकों के रचयिता तथा सम्पादक।

श्री ओम व्यास 'ओम'

-हास्य व्यंग्य और करूणा के उभरते हुये कवि, आकाशवाणी-दूरदर्शन तथा देश-विदेश में अपने काव्य पाठ और संचालन के लिए लोकप्रिय।

श्री रामेन्द्र मोहन त्रिपाठी

-विगत चार दशकों से हिन्दी मंचों पर सम्प्रेषण के गुणवत्ता युक्त गीतकार के रूप में प्रतिष्ठित।
-अत्यधिक लोकप्रिय कवि जिन्होंने कविता की हर विधा में श्रेष्ठ रचनायें कीं।

सुश्री सरिता शर्मा

-पिछले बीस वर्षों से हिन्दी काव्य मंचों पर बड़ी तेजी के साथ ख्याति अर्जित करने वाली गीत कवियित्री हैं।

श्री राधा गोविन्द पाठक

-पिछले पचीस वर्षों से बृजभाषा में ललित गीत, छन्द रचनाओं के प्रणेता नयी पीढ़ी के सर्वाधित ख्यातिप्राप्त कवि हैं।

डा० रमाकान्त शुक्ल

-आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, राजधानी कालेज, दिल्ली विश्व विद्यालय।

-२६ से अधिक ग्रन्थों के रचयिता, संस्कृत के विश्वविख्यात कवि और अब तक ६० देशों की यात्रा कर चुके हैं।

डा० इच्छाराम द्विवेदी

-आचार्य एवं अध्यक्ष पुराण एवं इतिहास विभाग श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्व विद्यालय, नयी दिल्ली।

-श्रीमद्भागवत के विशिष्ट विद्वान।

-४२ ग्रन्थों के रचयिता, संस्कृत हिन्दी एवं उर्दू साहित्य में निरन्तर लेखनरत हैं।

डा० विष्णु सक्सेना

-हिन्दी मंच, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के अति लोकप्रिय कवि।

-देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में साहित्यिक एवं चिकित्सा-सम्बन्धी लेखों का निरन्तर प्रकाशन।

-विभिन्न साहित्यिक पुरस्कारों से सम्मानित, कई बार विदेश यात्रायें।

-फागुन के राग, पुष्पों के पराग के अनुपम विहाग हैं। उनके गीत रागात्मकता को सोहाग देते हैं।

श्री कैलाश गौतम

-हिन्दी और भोजपुरी बोली में प्रेमचन्द के उत्तराधिकार को ईमानदारी से जीने व विस्तार देने वाले, संघर्षशील, ठेठ और खाली तेवर वाले किसान कवि और लेखक, हिन्दुस्तान अकादमी इलाहाबाद के अध्यक्ष हैं।

डा० रागिनी चतुर्वेदी

-हिन्दी और ब्रज बोली की मिठास को गीतों में व्यक्त करने वाला स्वर है।

श्रीमती राधा पाण्डेय

-अवधी, हिन्दी और ब्रज की रससिद्ध कवियत्री हैं।

श्री गुरू सक्सेना

-सहज हास्य के मूर्तिमन्त स्वरूप, व्यंग और विद्रूप के प्रभावी प्रारूप, कविता के मंच पर अपनी विधा के भूप, अनूप हैं श्री गुरू सक्सेना।

डा० शिवओम 'अम्बर'

-हिन्दी गीत-ग़ज़ल एवं अन्य विधाओं के सशक्त हस्ताक्षर, काव्य मंचों के सर्वाधिक लोकप्रिय संचालक, सांस्कृतिक साहित्यिक श्रेष्ठ रचनाओं के साधक कवि हैं।

शब्दम् स्थापना दिवस के पूर्व की कुछ गतिविधियाँ

मुंशी प्रेमचन्द स्मृति संगोष्ठी (१ अगस्त, २००४)

ग्रीष्म कालीन काव्य गोष्ठी (३ अगस्त, २००४)

श्रीमती प्रतिभा प्रल्हाद द्वारा भरतनाट्यम (५ सितम्बर २००५)

तुलसी को हम जान नहीं पाये (२२ अगस्त, २००४)

श्रीमती शोभना नारायण का कत्थक नृत्य (१५ अगस्त, २००५)

हिन्दी दिवस प्रश्न मंच प्रतियोगिता (१४ सितम्बर, २००४)

गांधी जिज्ञासा प्रश्न मंच (२ अक्टूबर, २००४)

राम की शक्ति पूजा (छाया मंचन) (२२ अक्टूबर, २००४)

पूर्णिमा का समर्पित गीत-रात (२७ अक्टूबर, २००४)

शब्दम्

सम्पर्क:

मुंबई : नंदलाल पाठक, उपाध्यक्ष शब्दम्
१२, अमिताभ सोसायटी १२५, मॉडल टाउन, ४ बंगलो , अंधेरी (प.) मुंबई – ४०० ०५३
फोन: २६३६८४५७, ५६९९३८६९ ई–मेल: hindlamps@sify.com

शिकोहाबाद : डॉ. सुबोध दुबे, सचिव, शब्दम्
हिन्द लैम्प्स लिमिटेड, शिकोहाबाद – २०५ १४१ फोन नं. – (०५६७६) २३४४००, २३४५०१ – ५०३
ई–मेल: hindlamps@sify.com

हिन्दी के लिए हम क्या कर सकते हैं

- हिन्दी को देश–विदेश में राष्ट्रभाषा का पूर्ण सम्मान दें।
- हम परस्पर हिन्दी बोलें, सीखें,और पढ़ें।
- अपने गाँव, कॉलौनी एवं शहर में हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे – निबन्ध, कहानी, नाटक, कविता, वाद–विवाद आदि को प्रोत्साहन एवं योगदान दें।
- अपने कारोबार में हिन्दी भाषा को सम्मान और स्थान दें।
- साहित्यिक आयोजनों में भाग लें एवं सहयोग दें।
- हिन्दी शिक्षकों, लेखकों, कवियों, रचनाकारों, कलाकारों को प्रोत्साहित करें।
- हिन्दी पुस्तकों की प्रदर्शनी, वाचनालय, मुद्रण, विक्रय को बढ़ावा दें।
- विश्व के उत्कृष्ट साहित्य का अनुवाद हिन्दी में एवं हिन्दी साहित्य का अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं में कराने में सहयोग करें।

आपके सहयोग, सुझाव एवं योगदान के लिए हम सदैव कृतज्ञ रहेंगे।

“हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिंदी ईमान की भाषा है, राष्ट्रीय एकता की भाषा है और आज़ादी की भाषा है। यह सब ताकत हिंदी में प्रकट करने की जिम्मेदारी हमारी है।”

–जमनालाल बजाज

सौजन्य :
बजाज इलैक्ट्रिकल्स लि.